।।ओ३म्।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक १८ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • सितम्बर (द्वितीय) २०१७

महर्षि दयानन्द सरस्वती

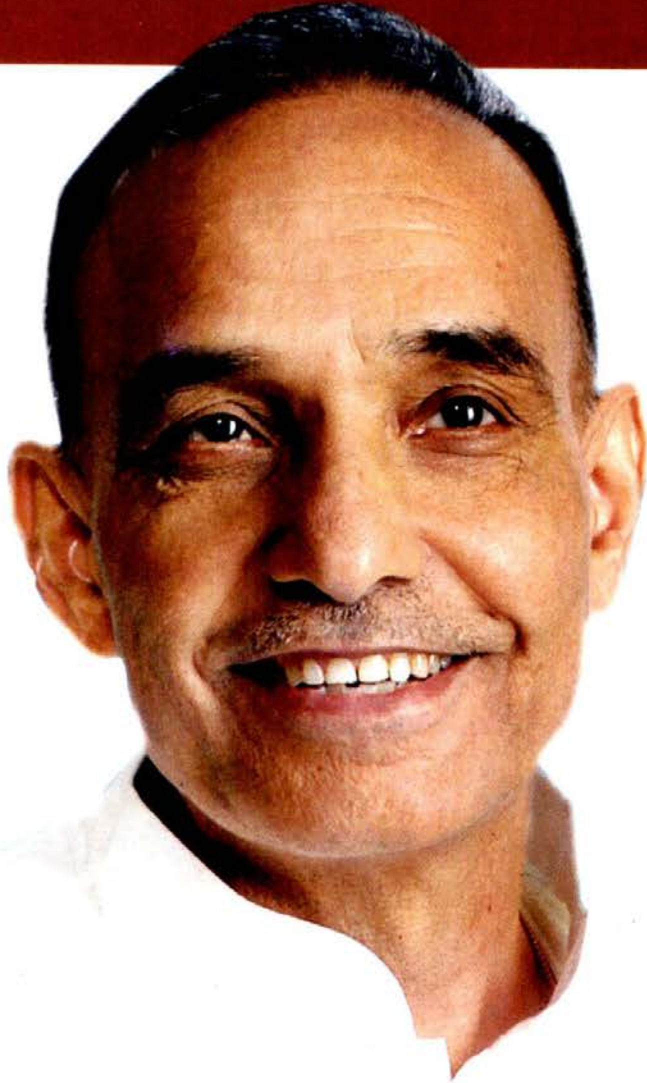

बागपत से सांसद महर्षि दयानन्द के अनुयायी

डॉ. सत्यपाल सिंह (पूर्व कमिश्नर, मुम्बई पुलिस) के केन्द्र सरकार में

मानव संसाधन, जल संसाधन तथा नदी विकास एवं गंगा संरक्षण राज्यमंत्री बनने पर

परोपकारिणी सभा की ओर से

हार्दिक बधाई

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : १८

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन** (१५ वर्ष)-२००० रु.। **एक प्रति** - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. पाखण्ड : और कब तक ?	सम्पादकीय	०४
०२. बलिवैश्वदेव यज्ञ-२	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	११
०४. दयानन्द-दर्शन	पं. उदयवीर शास्त्री	१५
०५. महर्षि-महिमा	लोकनाथ तर्कवाचस्पति	१९
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२२
०७. दिल्ली दरबार १८७७ में महर्षि.....	डॉ. रामचन्द्र	२३
०८. वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय		२६
०९. श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज	पं. ब्रह्मदत्त सोढा	२९
१०. भाषाई और सांस्कृतिक संकट की...	अखिलेश आर्येन्दु	३५
११. शङ्का - समाधान - ९	डॉ. वेदपाल	३८
१२. संस्था-समाचार		४०
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

पाखण्ड : और कब तक ?

महर्षि दयानन्द ने कुम्भ के मेले में पाखण्ड-खण्डिनी पताका लगाकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रचलित गुरुडम, पाखण्ड, अंधविश्वास इत्यादि के विरुद्ध उद्‌घोष किया था। तत्कालीन समाज में महर्षि दयानन्द का यह कदम युग परिवर्तन का सूचक था। आज लगभग 140 वर्ष के बाद भी भारत में गुरुडम के विभिन्न रूप न केवल पल्लवित हो रहे हैं बल्कि निर्भय होकर स्वयं को संपोषित और संवर्द्धित भी कर रहे हैं। अभी हाल ही में तथाकथित संत गुरुमीत उर्फ राम रहीम सिंह जैसे स्वयंभू गुरु उर्फ परमात्मा को न्यायपालिका ने जेल भिजवाया है।

प्रश्न उठता है कि यह गुरुडम जो हरियाणा सहित आस-पास के क्षेत्रों में विगत लगभग 20 वर्ष से पल्लवित हो रहा था, जिसमें नौकरशाही की संवेदनहीनता और छद्म नेताओं का ही योगदान रहा, जिसमें आश्रमों-डेरों में करोड़ों रुपये के निर्माण हुए, विलासिता की वस्तुएँ एकत्र हुईं, महिलाओं और मानवों का शोषण हुआ और लोकतान्त्रिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ीं, तब न तो राज्य सरकार को उसके अवैध क्रिया-कलाप दिखे और न ही लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ को। यह आश्चर्य की बात है कि वह हरियाणा जहाँ आर्यसमाज का सर्वाधिक प्रभाव और प्रचार है उसके द्वारा भी तथाकथित इस गुरुडम के विरुद्ध कोई सुनियोजित प्रयास दृष्टिगोचर नहीं हुआ, जैसा कि ढोंगी रामपाल के विरुद्ध हुआ था। कभी आसाराम, कभी रामपाल, कभी राम रहीम, ये सभी एक ही श्रृंखला की उपज हैं जिनके प्रति राजनेता, धनाढ्य वर्ग और अनपढ़ तथा पिछड़े हुए लोग तथाकथित चमत्कार के घेरे में आकर स्वयं को इनकी कृपा का पात्र बनाने की होड़ में निरन्तर संलग्न रहते हैं। जो नेता इनकी सहायता से चुनाव जीतते हैं, उन्हें क्या वास्तव में जन-नेता कहा जा सकता है?

धन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्होंने वेद के आधार और तर्क की कसौटी पर अनुसंधान करते हुए ऐसे किसी भी ढोंग और पाखण्ड का सशक्त रूप से खण्डन करने का आह्वान किया। ये उनकी दूरदृष्टि का परिचायक था कि जब तक समाज में धर्म के आधार पर ढोंग और अन्धविश्वास, फलित ज्योतिष और चामत्कारिक मूर्तिपूजा के विकल्प खुले रहेंगे तब तक कोई भी सत्ता इनसे लाभ लेने के लिए हमेशा आतुर होती रहेगी। धर्मनिरपेक्षता का यह अभिप्राय नहीं होता कि राज्य अपने सामने अवैज्ञानिक और अतार्किक रीति-रिवाजों, क्रिया-कलापों को मूक होकर मौन स्वीकृति देता रहे। ऐसा होने पर दुष्परिणाम यह होता है कि आम जनता स्वत: ही इन ढोंगियों और प्रपंचियों की ओर आकर्षित होने लगती है और फिर झूठ के आधार पर प्रचार और प्रसार करते हुए भोली जनता का शोषण किया जाता है। धन्य है न्यायपालिका जिसने न्याय के आधार पर इन्हें दण्डित करने का प्रयास किया अन्यथा लोकतन्त्र के अन्य आधार-स्तम्भ केवल अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की आड़ में मूक दर्शक बनकर ही निहारते रहते।

आज आर्यसमाज के समक्ष सर्वाधिक चुनौतियाँ हैं। महर्षि दयानन्द के समय और तत्पश्चात् आर्यजनों ने जिस प्रकार पाखण्डों का खण्डन किया उससे आम जनता में नवजागरण का प्रस्फुटन हुआ। आज हम भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुँचे हुए हैं जिसका आधार विज्ञानसम्मत सिद्धान्त हैं, फिर भी बौद्धिक वर्ग ऐसे तथाकथित ढोंगी और पाखण्डी गुरुओं का खण्डन करने की अपेक्षा उनके चमत्कार को ढाल बनाकर मीडिया में छाया रहता है, क्योंकि व्यापारिक बुद्धि के अनुसार ये सभी आडम्बर और पाखण्ड मानने वाले लोग धर्म के आधार पर विज्ञापन देकर अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। परिणामत: आम जनता इनके राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य आडम्बरपूर्ण प्रभामण्डल एवं चमत्कारों को देखकर प्रभावित होने लगती है और फिर इनके कुचक्र में फँस जाती है। खास तौर पर डेराबाजी और पारिवारिक सत्संगों के माध्यम से चेले-चेलियों की जमात सुनियोजित तरीके से तैयार की जाती है। दूरदर्शन पर **निर्मल बाबा का चमत्कार** हम प्रतिदिन खुलेआम देखते हैं। क्या आज के वैज्ञानिक युग में विज्ञान विरोधी बातों को राज्य को इस प्रकार प्रचारित और प्रसारित होने देना चाहिए? क्या प्रेस की स्वतन्त्रता का यह अभिप्राय है कि हम धार्मिक स्वतन्त्रता के आधार पर ऐसे पाखण्डों के विरुद्ध संवैधानिक कार्यवाही करने को तत्पर न हों? निश्चय ही न्यायपालिका ने जिस प्रकार संविधान के आधार पर तीन तलाक को असंवैधानिक घोषित किया उसी प्रकार ऐसे पाखण्डों के विरुद्ध भी जनहित याचिका लगाकर

सामान्य जनता को इनके शोषण से मुक्त कराने की महती आवश्यकता है। समाज में धूर्त गुरु भोली-भाली महिलाओं को शिष्यायें बनाकर जिस प्रकार अनैतिक अत्याचार और पोप-लीला करते हैं उसके विरुद्ध आम जनता को जाग्रत करने की भी महती आवश्यकता है।

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का यह अभिप्राय नहीं है कि कोई भी व्यक्ति संविधान के विरुद्ध अवैज्ञानिक कथाओं और कपोलकल्पित घटनाओं के आधार पर स्वयं को भगवान् सिद्ध करे। इस पलायनवाद, मूर्तिपूजा, वृक्षपूजा, भूत-प्रेत इत्यादि ढोंगों और अन्धविश्वासों का खण्डन आर्यसमाज की मूल विचारधारा में है, इनका विरोध करने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए और विज्ञानसम्मत तर्क की कसौटी पर परमतत्त्व की विवेचना करनी चाहिए। झूठे चमत्कारों के आधार पर स्वर्ग जैसी कल्पना युवाओं को केवल अन्धकार, अन्धविश्वास और पाखण्ड के प्रति ही आकर्षित करती है। त्याग, तपस्या, भक्ति, साधना, ध्यान, कर्त्तव्यनिष्ठता के आधार पर ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग भारतीय प्राचीन चिंतनधारा की आधारशिला रही है। यह शाश्वत पथ है, इसी से मानव का कल्याण होगा और आर्यजनों को संगठित रूप से ऐसे गुरुओं के विरुद्ध पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखकर तथा स्थान-स्थान पर नुक्कड़ नाटक करके, विद्यालयों में छात्रों से संवाद करके और बुद्धिजीवियों के मध्य विचार-विमर्श द्वारा यह अभियान प्रारम्भ करना होगा तभी हम ऐसे ढोंगी और पाखण्डी गुरुओं के विरुद्ध आम जनता को सजग करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही राजनेताओं को, जो जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं, उन्हें भी बाध्य करना पड़ेगा कि वे ऐसे गुरुओं के तथाकथित आश्रमों में राजनीतिक लाभ के लिए उनका समर्थन लेने न जाएँ और न ही उन्हें राज्य-आश्रय देवें, क्योंकि ये राजनेताओं और सेलिब्रिटीज की आड़ में ही अपने काले धंधे को चमकाने के लिए तत्पर रहते हैं।

महर्षि दयानन्द ने सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग को ही जीवन का मूल मन्त्र बनाया। उन्होंने दुराग्रह और अविद्यादि दोषों को दूर करने में सर्वाधिक प्रयत्न किया। इसीलिए उन्होंने लिखा है कि, ''हाय, क्यों पत्थर की पूजा करके सत्यानाश को प्राप्त हुए। देखो, जितनी मूर्तियाँ हैं उनके स्थान पर शूरवीरों की पूजा करते तो देश की कितनी रक्षा होती।''

महर्षि दयानन्द ने देखा कि भाग्यवाद, अकर्मण्यता, अन्धविश्वास इत्यादि के कारण मनुष्य इसी प्रकार के ढोंगी और पाखण्डी तथाकथित संतों के चंगुल में फँस जाते हैं। अतः सत्यार्थ प्रकाश में पदे-पदे महर्षि ने इन्हीं पाखण्डों का डटकर मुकाबला किया और उनका खण्डन किया।

सामान्य जन सुविधाभोगी, आरामतलब और सरलता से धनैश्वर्यादि भोगों को पाना चाहते हैं। धनवान् लोग अपने पापों और अनाचारों को छिपाने या क्षमा कराने की इच्छा रखते हैं। चालाक और छली-प्रपंची ढोंगी बाबा ऐसे लोगों की इस कमज़ोर नस को दबाकर उन्हें मूँडते हैं और सदा के लिए अपने जाल में फँसा लेते हैं। वास्तव में सत्यविद्या और ज्ञान के अभाव में ही यह कुचक्र फलता-फूलता है, अन्यथा कोई कारण नहीं कि लोक यह समझ सके कि धर्म ही सब प्रकार की उन्नतियों का मूल कारण है। धर्म ही मनुष्यों को परस्पर सद्भाव से रहते हुए लौकिक और पारलौकिक उन्नतियों को प्राप्त करने का मार्ग सुझाता है। फिर यह कैसे संभव है कि धार्मिक जन और धर्मगुरु ढोंग-पाखंड, अन्धविश्वास, धनैश्वर्य और सुरा-सुन्दरी के जाल में फँसे हुए हों? मनु महाराज कहते हैं-

अर्थ कामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।

- मनु. २.१३

धन-लोभ और कामवासनादि विकारों में निर्लिप्त मनुष्य को ही धर्म का सम्यक् ज्ञान हो सकता है और सत्य धर्म को जानने की इच्छा करने वालों के लिए **वेद** ही परम प्रमाण हैं। अतः वेद-मत के मंडन और पाखंडों के खंडन के प्रचार-प्रसार से ही ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सकेगी। राज्य को भी इसमें सहयोग करना चाहिए, क्योंकि वेद-धर्म मनुष्यमात्र का है, सार्वभौम और सार्वकालिक है; इसमें किसी मनुष्य की हानि न कर सबके कल्याण की कामना है। साथ ही साथ यह ढोंग-पाखंड, अन्धविश्वास और अवैज्ञानिक पद्धतियों से मनुष्य को बचाता है, क्योंकि यह तर्क पर आधारित है-

यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः।।

- मनु. १२.१०६

दिनेश

बलिवैश्वदेव यज्ञ-२

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर

गतांक से आगे.....

कोई-कोई काम करके कष्ट पाकर हमें अच्छा लगता है। कष्ट तो हम जानवर को भी देते हैं, कष्ट हम माँ-बाप को भी देते हैं। माँ-बाप को हम रस्सी बाँधकर नहीं रखते, वो समझदार हैं, मनुष्य हैं। जानवर नासमझ हैं इसलिए रस्सी बाँधकर रखते हैं। दूसरी बात कही जाती है कि दूध भी मांस ही है। तर्क क्या है उनका कि दूध जो है वो खून से बनता है। क्या विचार है आपका, बनता है कि नहीं बनता है? बनता तो खून से ही है। खून से ही का मतलब होता है, खून में से जो रस है वो ग्रन्थियों के द्वारा अलग कर लिया जाता है। आप कभी शरीर को खोल करके देखो तो दूध आने की नली सीधी खून की नली से जुड़ी हुई है। स्तनों में दूध का सम्बन्ध खून से है। प्रवाहित होने वाली चीज शरीर में रक्त ही है और कोई चीज तो है नहीं। कोई चीज बह रही है तो वो कहाँ बहेगी? खून की नलियों में बहेगी, तो जो कुछ बह रहा है उन्हीं में बह रहा है। ये ग्रन्थियाँ क्या करती हैं? ये खून से दूध को अलग कर लेती हैं और स्तनों की ओर भेज देती हैं। तो इसका रंग खून का रहता है क्या? नहीं रहता। स्वाद खून का रहता है क्या? नहीं रहता। दूसरी बात, आप किसी का खून निकालेंगे तो उसे कष्ट होगा और दूध निकालेंगे तो सुख होगा। यदि आप दूध न निकालें, यदि बच्चा उस समय दूध न पिये तो मां को कष्ट होता है। गाय का दूध नहीं निकालो तो गाय को कष्ट होता है, निकालना ही पड़ता है। सूख जायेगा तो अलग बात है। इसलिये मैंने कहा खून में हिंसा है और दूध में हिंसा नहीं है। तीसरी चीज तुम ये कहते हो कि दूध खून से बनता है इसलिये खून है। मैंने कहा, तुम्हारा सारा शरीर किससे बनता है? अन्न से, गेहूँ से। मैंने गेहूँ खाया तो मेरे बाल गेहूँ हो जायेंगे? बने तो गेहूँ से ही हैं तो क्या गेहूँ मान लें? चीज का स्थान बदल गया, रूप बदल गया, गुण बदल गया फिर वो चीज वही कैसे रही? गेहूँ से भूसा भी बना है, दाना भी बना है तो भूसा खायेगा? बना तो गेहूँ से ही है। लेकिन वो तो नहीं है। वैसे ही दूध रक्त से बना है लेकिन रक्त तो नहीं है।

इस दृष्टि से जब हम विचार करते हैं तो हमारे ऋषियों ने हमको एक बात समझाई है कि संसार की हर चीज का उपयोग तो करना है लेकिन दुरुपयोग नहीं करना है। अगर ये सोचें कि किसी से काम लेना है, लेकिन उसे कष्ट नहीं देना है, फिर आप मजदूर को कष्ट नहीं दोगे तो आपके खेत में, दुकान में काम होगा? आप उसको कष्ट देते हो, उसके बदले में उसे आजीविका देते हो। इसमें जहाँ दोनों का सन्तुलन गड़बड़ है उतना अन्याय है और सन्तुलन ठीक है तो न्याय है। जितना आपको कष्ट देने का अधिकार है उतना धन देने का आपका कर्त्तव्य है। सारे संसार में जो परिस्थिति है, वो सन्तुलन और समन्वय की है। **बलिवैश्वदेव यज्ञ में क्या है?** भाई, पितृयज्ञ में तो माता-पिता का ध्यान रखा। अतिथि यज्ञ में अतिथियों का, विद्वानों का ध्यान रखा। देवयज्ञ में पर्यावरण का रखा, ब्रह्मयज्ञ में अपना रख लिया। अब बचे कौन? वो लोग बचे जो आखिरी हैं। जो माँग नहीं सकते। लड़ नहीं सकते, छीन नहीं सकते, अपने आप ले नहीं सकते। उनमें से किसी के पास हाथ नहीं है, किसी के पास बुद्धि नहीं है, किसी के पास दृष्टि नहीं है। किसी के पास कुछ नहीं है। उनको कौन देखे? उनका उत्तरदायित्व किस पर? हम पर अत: उस उत्तरदायित्व का भान कराने के लिए कौन सा यज्ञ है? **बलिवैश्वदेव यज्ञ। पिछड़े हैं, बीमार हैं, उपेक्षित हैं, पशु हैं, पक्षी हैं, प्राणी हैं, वो सारे के सारे बलिवैश्वदेव यज्ञ में आ जाते हैं।** हमसे जुड़े हुए इन सभी की चिन्ता करना, बलिवैश्वदेव यज्ञ है। इसी चिन्ता को हम यज्ञ मानकर चलते हैं। ये जो चिन्ता है, हमारे ऋषियों ने बड़े स्थायी रूप से हल की हुई है। इतनी वैज्ञानिक सोच और सन्तुलित सोच आपको और कहीं नहीं मिलेगी। एक दिन मैंने हॉलैण्ड में एक से पूछा- भाई, तुमने यहाँ के निवासियों से बहुत सारी चीजें सीख लीं। पैन्ट पहनना सीख लिया, टाई बाँधनी सीख ली, भाषा सीख ली, इन्होंने भी तुमसे

कुछ सीखा क्या? क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि दो आदमी साथ रहें और एक-दूसरे से कुछ न सीखें। कोई कम सीखता है, कोई अधिक सीखता है, लेकिन एक-दूसरे से दोनों प्रभावित होते हैं। उसने मुझे बताया कि यहाँ के लोगों ने तीन चीजें हमसे सीखीं। एक तो इन्होंने नहाना सीखा। ये भले लोग नहाते ही नहीं थे। कभी फुरसत में पानी में गिरने की इच्छा हुई गर्मी में, तो नहा लिये। एक तो गर्मी यहाँ पड़ती नहीं। इसलिये उनका बिना नहाये गुजारा हो जाता है और नहाना ही हुआ तो बाहर तालाब बना हुआ है, कभी-कभार नहा आते हैं, महीने-दो महीने में। पहले इनके घर में स्नानागार नहीं होता था। नहाने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर कभी-कभी जाते थे, जब से ये हमारे चक्कर में फँसे हैं, तब से इन्होंने स्नान करना प्रारम्भ किया है। हम तो रोज सवेरे नहाते हैं, ये शाम को नहाते हैं। ये दफ्तर से आते हैं, दुकान से आते हैं, ५ बजे, ६ बजे और फिर नहाकर शाम का भोजन करते हैं। हमारा मुख्य भोजन दोपहर में होता है, इनका मुख्य भोजन शाम को ५ बजे होता है। वहाँ दोपहर में कोई भोजन नहीं करता। मैं गया तो यूँ बोले, पंडित जी! दोपहर में तो आपको खाना मिलेगा नहीं तो डबल रोटी खा लेना। दलिया रख गया। बोले- इसमें दूध डाल लेना, बन जायेगा। भोजन शाम को बनता है सब घरों में। आपके लिये भी ले आयेंगे। फिर बोले- इन्होंने नहाना सीखा और ये शाम को दफ्तर से आकर नहाते हैं, भोजन करते हैं फिर सोते हैं। मैंने पूछा और क्या सीखा? बोले- ये किसी के मरे में नहीं जाते थे। जिसका कोई सम्बन्धी मरता था वो अपना लाद के ले जाये। अकेला तो अकेला, दो हों तो दो और जा के श्मशान में गाड़ देते। न कोई पूछने वाला, न कोई सान्त्वना देने वाला। भारतीयों को देखा कि ये तो गाँव का गाँव जाता है। मरता एक है, हजार पहुँच जाते हैं। अब ये भी दस-पाँच जाने लगे हैं। तीसरा अन्तर बोले- यहाँ कोई किसी को भोजन के लिए पूछता नहीं था। आप गये किसी के यहाँ और भोजन का समय है तो कहते थे कि तू अखबार पढ़ ले, मैं रोटी खाकर आता हूँ। अब ये पूछ लेते हैं कि भोजन का समय है, आप भोजन करेंगे? हमारे ऋषियों ने तो इन मूर्खताओं का पहले ही उपाय किया हुआ है। बातें छोटी लगती हैं, लेकिन आप विचार करके देखो कि इनकी दैनिक जीवन में आवश्यकता क्या है? यदि आप विचार करेंगे तो आपको ऋषियों की बुद्धिमत्ता पर बड़ा गर्व अनुभव होगा और उनके पालन करने में सुख भी प्राप्त होगा।

पृष्ठ संख्या ४२का शेष भाग....

दिया जाएगा, जो जीवन में वैदिक सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा ग्रहण करना चाहती हैं तथा आर्यसमाज का प्रचार करना चाहती हैं। गुरुकुल में हारमोनियम, ढोलक, तबला, वायलिन, बाँसुरी आदि परम्परागत वाद्ययन्त्र सिखाने की सुन्दर व्यवस्था है। परम्परागत गुरुकुलीय शिक्षा, कम्प्युटर, संगीत एवं सिलाई प्रशिक्षण सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है।

चुनाव समाचार

१२. स्त्री आर्यसमाज धामावाला देहरादुन, उत्तराखण्ड के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती डॉ. निर्मला शर्मा आर्या, **मन्त्राणी**- श्रीमती अरुणा गुप्ता आर्या, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती रेखा आर्या को चुना गया।

शोक समाचार

१३. ऋषि उद्यान कार्यालय अध्यक्ष श्री मुमुक्षु मुनि की धर्मपत्नी **श्रीमती बिट्टन देवी** का आकस्मिक निधन दि. ६ अगस्त २०१७ को ७४ वर्ष की आयु में हो गया। वह सात्विक प्रवृत्ति की धार्मिक महिला थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

१४. अजमेर निवासी आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्ता श्रीमती अरुणा पारीक के ज्येष्ठपुत्र **श्री विजय पारीक** का आकस्मिक निधन दि. २८ अगस्त २०१७ को ५७ वर्ष की आयु में हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उनके निधन से परिवारजनों को गहरी क्षति पहुँची है।

१५. आर्यसमाज गोमाना छोटी सादड़ी, जि. प्रतापगढ़, राज. के वयोवृद्ध प्रधान **श्री घीसालाल पाटीदार** का निधन दि. १३ अगस्त २०१७ को ८९ वर्ष की आयु में हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने जीवनकाल में आर्यवीर दल के कई शिविर लगाए तथा सभा के लिए अन्न संग्रह के कार्य में अद्वितीय योगदान दिया।

१६. वैदिक धर्म के मर्मज्ञ, प्रचारक व उच्च कोटि के संन्यासी **स्वामी ध्यानानन्द** (पूर्व नाम सत्यदेव) का आकस्मिक निधन दि. ३० अगस्त २०१७ को ७६ वर्ष की आयु में छोटी सादड़ी में हो गया।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

पृष्ठ संख्या ३९ का शेष भाग..........

द्विवचन का प्रयोग हुआ है। इसलिए स्पर्श करते समय दोनों छिद्रों का स्पर्श करना होता है। इसी प्रकार 'अक्ष्णो:' 'कर्णयो:' 'बाह्वो:' आदि भी द्विचनान्त हैं, इनमें दोनों का स्पर्श किया जाता है। किन्तु **वाक्**-'**वक्ति शब्दानुच्चारयति यया सा वाक्**'-शब्दों का उच्चारण करने वाली इन्द्रिय वाक् एक होने से मन्त्र में-'**वाङ्म आस्ये**' एकवचनान्त 'वाक्' प्रयुक्त है। अत: अंगस्पर्श भी एक ही बार करना होता है। किन्तु ब्रह्म यज्ञ/सन्ध्या करते समय-ओ३म् वाक् वाक्-मन्त्रपूर्वक किया जाने वाला स्पर्श मुख के दोनो पार्श्व पर किया जाता है।

इस सम्बन्ध में महर्षि का स्पष्ट निर्देश-संस्कार विधि सामान्य प्रकरण में '**ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्त**'- इस मन्त्र से मुख तथा गृहाश्रम में सन्ध्या/ब्रह्मयज्ञ करते समय ओ३म् वाक्-वाक्-इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वामपार्श्व के रूप में उपलब्ध है। अत: यज्ञ/अग्निहोत्रादि में एक बार तथा सन्ध्या-ब्रह्मयज्ञ में दो बार मुख का स्पर्श करना चाहिए।

३. **मेखला**-मेखला शब्द का अर्थ है-कोई भी ऐसी वस्तु जो किसी वस्तु, व्यक्ति को चारों ओर से लपेट सके। अर्थात्-कटिबन्ध, तगड़ी, करधनी आदि-'**मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागे-मी+खल+टाप्, गण:।**' महाकवि कालिदास कृत रघुवंश ६.६३, कुमारसम्भवम् १.५, ४.८ तथा ऋतुसंहार १४ में मेखला का वर्णन द्रष्टव्य है। संस्कृत साहित्य में पृथिवी को सागरमेखला (महीं सागरमेखलां-चारों ओर समुद्र से आवेष्टित) कहा गया है।

गृह्यसूत्रकारों ने ब्रह्मचारी के लिए जिस डोरी को कटिप्रदेश में बाँधने के लिए कहा है, उस डोरी को मेखला नाम से अभिहित किया है। तद्यथा-'**सप्तमुञ्जां मेखलां धारयेत्**' (काठक गृ. १.६ गोभिल गृ. ३.१.२७)-'**मेखला धारण.......इत्येते नित्यधर्मा:**' ने इसे ब्रह्मचारी के नित्य धर्मों में गिना है। इस सन्दर्भ में **आश्वलायन गृ. १.१९.१०-११** आदि भी द्रष्टव्य हैं, जहाँ इसे वर्णानुसार पृथक्-पृथक् उपादान से बनाने का निर्देश उपलब्ध है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में भी मेखला का सन्दर्भ द्रष्टव्य है।

यज्ञ के सन्दर्भ में भी मेखला का वर्णन उपलब्ध है। वहाँ पर इसे वेदी को चारों ओर से आवेष्टित करने वाली के रूप में वर्णित किया गया है।

श्रौत यज्ञों की वेदी वर्तमान में बनाई जाने वाली वेदी से बहुधा भिन्न होती है, वहाँ अनेक प्रकार की वेदी वर्णित हैं। इस भेद को सुपर्णचिति, श्येनचिति, सौत्रामणि याग विहार, निरुढपशुबन्ध शाला आदि के रूप में भली प्रकार देखा जा सकता है। इसके लिए मानव, आपस्तम्ब, बौधायन, कात्यायन आदि शुल्बसूत्रों, कात्यायन यज्ञ पद्धति विमर्श तथा देवयाज्ञिक पद्धति आदि में देखना चाहिए।

श्रौतयाजी की महावेदी में प्राय: गार्हपत्यखर वृत्ताकार, दक्षिणाग्निखर अर्धवृत्ताकार बनाए जाते हैं, किन्तु आह्वनीयखर चौकोर होता है। अत: इन पर बनाई जाने वाली मेखला भी क्रमश: वृत्ताकार, अर्धवृत्ताकार तथा चौकोर ही बनेंगी। अर्थात् वेदी की जो आकृति होगी, मेखला भी तदनुरूप ही होंगी।

मेखला संख्या निर्धारित नहीं है। सोमशम्भु का मत है-

त्रिमेखलं द्विजे कुण्डं क्षत्रियस्य द्विमेखलम्।
मेखलैको तु वैश्यस्य शूद्रस्यामेखलं मतम्।।

यहाँ वर्णानुसार मेखला की संख्या का उल्लेख है। इसी प्रकार चौड़ाई व ऊँचाई को लेकर भी अनेक पक्ष हैं, किन्तु तीन मेखला का पक्ष अधिक प्रचलित है। वैखानस श्रौत सूत्र १.२-३ में पाँच-पाँच अंगुल विस्तार की तीन मेखलाओं का निर्देश है-

''पश्चिमे भूरिति गार्हपत्यायतनं रज्ज्वाष्टादशाङ्गुल्या वृत्तं भ्रामयित्वाष्टाङ्गुलोन्नतं स्थण्डिलं कृत्वा......शिष्टं तदूर्ध्वमेखलास्यात्...''

''वेद्यां दक्षिणस्यां पश्चिमे भागे भुव इत्यन्वाहार्यपचनं...........मध्यनिम्नमूर्ध्वाधरा मेखला च.......तिस्रो मेखला पञ्चाङ्गुलिविस्तारा.....।''

मेखला की तीन संख्या तथा पांच अङ्गुल विस्तार सामान्य है। इनकी संख्या व परिमाण न्यूनाधिक भी वर्णित है। वैदिक वाङ्मय में तीन तथा पांच ऐसी संख्याएं हैं, जिन्हें आध्यात्मिक एवं आधिदैविक पक्ष में विस्तारपूर्वक व्याख्यात करना सम्भव है। इसीलिए यह संख्या व माप बहुमान्य है।

महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में पांच-पांच अंगुल विस्तार की तीन मेखलाओं का निर्देश किया है, किन्तु पांच-पांच अंगुल की मेखला को जिस वेदी पर बनाने का निर्देश है, वह दैनिक यज्ञ की सामान्य वेदी नहीं है, उसके परिमाप से यह सुस्पष्ट है।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : ८ से १५ अक्टूबर २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

पुनर्जन्म का सिद्धान्त इस्लाम म- पुराने आर्यसमाजी वैदिक सिद्धान्तों पर लिखते भी बहुत सोच समझ कर थे और बोलते भी ऐसा थे कि श्रोता सभास्थल से निकलते हुये उनके वचनों की चर्चा घर पहुँचने तक करते जाते थे। अन्य मत-पंथों का भी उनको गम्भीर ज्ञान था। अब की बात हम क्या कहें व क्या लिखें। इन दिनों किसी पत्रिका में इस्लाम में पुनर्जन्म की चर्चा पर एक लेख किसी ने पढ़ाया। उसमें इस्लामी साहित्य की पुनर्जन्म विषयक एक हदीस का प्रमाण तो ठीक था, परन्तु स्रोत का नाम लेखक ने कपोल कल्पित दिया। हमारे लेखकों को इतना भी पता नहीं कि इस्लाम में नये-नये विद्वानों व लेखकों ने खुलकर पुनर्जन्म को स्वीकार किया है। मेरे साहित्य में दिये गये प्रमाणों का कोई लाभ तो उठाये।

गाज़ी इल्मुद्दीन का पुनर्जन्म- लाहौर से महाशय राजपाल के हत्यारे इल्मुद्दीन की जीवनी छपी है। उसके जोशीले विद्वान् लेखक ने लिखा है कि इल्मुद्दीन को फाँसी दिये जाने के बाद उसकी माँ बहुत दु:खी, निराश, उदास रहती थी। उसकी षड़ोसन चिराग़ बीबी को सपने में इल्मुद्दीन ने कहा, मेरी माँ को कहना रोया न करे। वह उदास न हो। मैं शीघ्र उनके घर में जन्म लूँगा। कुछ समय के पश्चात् उसने अपने सगे भतीजे रशीद अहमद के घर में जन्म लिया। परिवार की गर्भवती महिला ने इल्मुद्दीन को फिर जन्म दिया। उस पुस्तक के पृष्ठ ११२ पर पढ़ लें। हमारे विद्वान् पढ़कर भी लाभ नहीं उठाते। डॉ. इकबाल के प्रबल तर्क पुनर्जन्म पर हम देते रहे हैं।

भगवान् भी डूब गये- टी.वी. में समाचार सुन रहा था। मेरे कानों में ये शब्द सुनाई पड़े कि लोग तो डूबे सो डूबे, गाँव के गाँव डूब गये और तो और भगवान् भी डूब गये। जब भगवान् अपने आपको डूबने से नहीं बचा सका तो वह जीव-जन्तुओं और मनुष्यों को क्या बचायेगा? करोड़ों हिन्दुओं ने यह समाचार सुना। किसकी आँखें खुलीं? सर्वव्यापक प्रभु जो कण-कण में है, हर मन में है, हर जन में है- जो प्रभु अजर है, अमर है और अविनाशी है, वह सच्चिदानन्द भगवान् भी क्या डूब मरा?

सत्य यह है कि डूब के वह भगवान् मरा जो मनुष्यों ने गढ़ा है, जो मनुष्य का बनाया भगवान् है वह टूटता-फूटता भी है। वह चुराया भी जाता है। वह डूबकर भी मरता है। यह सचाई सबके सामने है। अरे ऋषि दयानन्द का कहा अब तो मान लो!

जुग बीत गया दीन की शमशीर ज़नी का
है वक्त दयानन्द शजआत के धनी का

देखकर भी जो न देखे और सुनकर भी जो न सुने उसको कौन उठावे और बचावे? टी.वी. में तिलकधारी एक पण्डित बोल रहे थे, आओ मैं बताता हूँ रक्षा-बन्धन का शुभ मुहूर्त क्या है? शुभ-अशुभ मुहूर्त बताकर हर बला को भगाने वाले तिलकधारी कश्मीर में शान्ति का मुहूर्त क्यों नहीं बताते? देश में सुख-शान्ति का मुहूर्त क्यों नहीं निकालते? अमरनाथ यात्री बर्फानी बाबा की महिमा गाते यात्रा पर जाते हैं। सरकार सहस्रों सशस्त्र सैनिकों की रक्षा में उन्हें अमरनाथ के दर्शन कराने भेजती है फिर भी हर बार अनेक यात्रियों की देशद्रोही हत्यारे हत्या कर जाते हैं। हमारे नयनों में तो अब रो-रो के नीर भी नहीं रहे। भोले के चमत्कारों की भी पोल खुल गई और पत्रे बनाने वाले, मुहूर्त निकालने वालों की भी नित्यप्रति पोल खुलती देखकर अभागा हिन्दू जड़-पूजा, पाषाण-पूजा को नहीं छोड़ता। एक सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् की उपासना छोड़ कर हर कंकड़, हर पेड़, हर नदी-नाले तथा प्रत्येक चित्र पर माला चढ़ाने वाले हिन्दू को कब समझ आवेगी?

लगाते हैं हर एक की जय के नारे
मगर बात मानी किसी की नहीं ह

स्वामी विवेकानन्द जी की अन्त:वेदना- रामकृष्ण मिशन ने स्वामी विवेकानन्द जी का एक जीवन-चरित्र छापा है। कई भाषाओं में प्रसारित हो चुका है। श्री स्वामी जी के अन्तिम दिनों में जब उनका प्रसिद्ध बेलूर मठ बन रहा था तो उसमें स्वामी रामकृष्ण व शारदा माता की मूर्तियाँ देखकर स्वामी जी ने कहा, मेरी यह कामना थी कि एक तो मन्दिर ऐसा हो जिसमें मूर्तियाँ न हों, परन्तु यहाँ भी ये आ गईं?

आर्य समाज के सहस्रों मन्दिर बिना पाषाण मूर्तियों के ही हैं, स्वामी जी यह भी जानते थे, परन्तु उनकी कामना

तो कोलकाता में दम तोड़ गई। जो घटना यहाँ दी है उसको झुठलाने की किसी में हिम्मत हो तो आगे आवे?

भला हो श्री एकनाथ रानाडे जी का जिन्होंने विवेकानन्द शिलास्मारक में ध्यान केन्द्र बनाकर उसे मूर्तिपूजा विहीन बनवाकर एक कलङ्क तो दूर कर दिया। वहाँ ध्यान केन्द्र में स्थूल अक्षरों में केवल 'ओ३म्' ही लिखा गया है।

पुराणों को भी तिलाञ्जलि दे गये- पता नहीं किसी जीवनी लेखक ने स्वामी विवेकानन्द की जीवनी में उनके अन्तिम दिनों में ढाका में दिया गया उनका पूरा भाषण दिया है या नहीं। यदि किसी ने उसे नहीं पढ़ा-सुना तो हम एक पुरानी पत्रिका से उसे लेकर परोपकारी में छपवा देंगे। उस व्याख्यान में वेदों की महिमा पर स्वामी जी ने बहुत कुछ कहा। इस पर किसी श्रोता ने विधर्मियों, विरोधियों-मैक्समूलर जैसों के प्रभाव में स्वामी जी से कहा, वेदों में तो अनाप-शनाप, अश्लील, विज्ञान-विरुद्ध कहानियाँ हैं। तत्काल स्वामी विवेकानन्द जी ने उत्तर दिया-वेद में कुछ भी विज्ञान-विरुद्ध, बुद्धि-विरुद्ध नहीं है। अनाप-शनाप कहानियाँ तुम्हारे पुराणों में हैं। स्वामी जी के शब्द कुछ भी हों, उनका सार यही है जो हमने यहाँ दिया है। हिन्दू हितकर बात सुनने से कतराता-घबराता है। हिन्दू को स्वामी विवेकानन्द जी की वेदोक्त सच्चाई भी नहीं सुहाती। क्यों? इसके दो कारण हैं-

१. हिन्दू समाज सबको वेद के सुनने-पढ़ने का अधिकार देने को आज भी तैयार नहीं। केवल ब्राह्मण कुल में जन्मा पुरुष ही वेद पढ़ व सुन सकता है।

२. दूसरा कारण यह है कि हिन्दू का दुराग्रह है कि वेद तो स्वामी दयानन्द को जी जान से प्यारा था। जो दयानन्द कहे वह तो कोई भी बात वे नहीं मानेंगे। भले ही बाल-विवाह जैसी कई कुरीतियाँ विवशता से छोड़नी पड़ी हैं। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द तो राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द का वेद पर उतना ही अधिकार मानता है जितना पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और चौधरी चरण सिंह जी और पं. दीनदयाल जी उपाध्याय का था। जिसको ऋषि की यह बात चुभती है उसको आर्यसमाज शास्त्रार्थ की खुली चुनौती देता है।

हिन्दुओ! पं. दीनदयाल की पीड़ा को जाना- मुझे इस बात का गौरव है कि यद्यपि मेरा किसी राजनीतिक दल से कोई सम्बन्ध नहीं तथापि मुझे एक बार अति निकट से कौमी फ़कीर पं. दीनदयाल जी के दर्शन करने और उनसे वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त है। हिन्दू समाज उनके चित्रों पर तो आये दिन माला चढ़ाता है, परन्तु **उनके हृदय की पीड़ा को पत्थर हृदय हिन्दू ने कभी अनुभव ही नहीं किया**। हम पहले भी यह प्रसंग लिखते रहे हैं और आज पुनः इसे दोहराते हैं।

श्री दीनदयाल जी अखिल भारतीय जनसंघ के मन्त्री के रूप में पहली बार उड़ीसा में जगन्नाथपुरी गये।

ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। संस्कार ही ऐसे थे। वो वहाँ का ऐतिहासिक मन्दिर देखने भक्तिभाव से गये। विशाल मन्दिर में पग-पग पर पुजारी बैठे थे। हर एक ने उनसे अपने -अपने भगवान् और अपनी-अपनी मूर्ति के लिये कु छ राशि चढ़ाने को कहा। वह मालदार लीडर तो थे नहीं। लोभी पुजारियों के व्यवहार से उनका मन आहत हुआ। यह भी बोध हो गया-हा! हिन्दू के असंख्य परमात्मा!

जब वह मन्दिर से बाहर आये तो पत्रकारों ने, प्रेस वालों ने अपने प्रदेश के ऐतिहासिक मन्दिर के बारे में उनके विचार पूछ लिये। तब श्री पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने प्रेस वालों को कहा, **''जब मैं मन्दिर में प्रविष्ट हुआ था तब मैं कट्टर सनातन धर्मी था और अब मैं मन्दिर से बाहर आया हूँ तो मैं कट्टर आर्यसमाजी हूँ।''**

उनके नामलेवा सब इस घटना को जानते हैं, परन्तु इसकी चर्चा वे क्यों करें। यही तो इतिहास-प्रदूषण व हटावट है। हमारा प्रश्न है कि अभागे हिन्दू ने इस प्रसंग से क्या प्रेरणा ली? इसकी आँखें कौन खोलेगा? इसको कभी बोध होगा भी या नहीं?

जातिवाद मिटाओ देश बचाओ- कई मास पूर्व हमने टी.वी. में सुना। प्रेस में बहुत चर्चा हुई। कई लीडरों ने अति उत्साह से ऐसी घोषणायें कीं कि ये करोड़ों विधर्मी पहले हिन्दू ही थे। किन्हीं कारणों से यह हमारी सम्पदा हमसे छीन ली गई। इन सबको शीघ्र वापिस लिया जावेगा। ऐसे ही लव जिहाद पर प्रतिक्रिया देते हुये कई एक ने (विशेष रूप से एक उत्साही सन्त ने) जो कुछ कहा था वह देशवासी जानते हैं। इन घोषणाओं के परिणाम पर हमें कुछ नहीं कहना। घोषणायें तो अच्छी ही लगने वाली थीं, परन्तु हिन्दू समाज के हितचिन्तक, हिन्दू-हिन्दू की रट लगाने वाले प्रत्येक भाई से हम कहेंगे कि आपको इस क्षेत्र का, इस कार्य का कुछ अनुभव और ज्ञान नहीं, आप

किसी से कुछ सीखना और किसी की सुनना भी नहीं चाहते। जिन्होंने इस पावन उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने प्राण तक वार दिये, आप **उन विभूतियों पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, भक्त फूल सिंह, स्वामी स्वतन्त्रानन्द और पं. नरेन्द्र जी, हैदराबाद का नाम तक लेने से कतराते और घबराते हैं।**

हमारी इतनी तो सुन लो, यदि आप जाति-रक्षा करना चाहते हो तो घोषणायें करने की बजाय "**जाति भेद मिटाओ-देश बचाआ**" यह अभियान छेड़ो। इस औषधि का पान करोगे तो आप बचोगे और देश सुरक्षित होगा। हरियाणा में, पंजाब में, गुजरात में, राजस्थान में, महाराष्ट्र में, बिहार में सब दिशाओं में जाति-पाँति आन्दोलन आरक्षण की आड़ में छेड़े जा रहे हैं। **यहाँ हिन्दू कौन है? भ्रम क्यों पालते फिरते हो? कोई गुर्जर है तो कोई जाट, कोई यादव तो कोई मराठा, आप इस भ्रम को दूर कर दो कि गंगा, नर्मदा, कैलाश सरोवर यात्रा और अमरनाथ यात्रा से हिन्दू जाति स्वस्थ और नीरोग होगी। विधर्मी बिना किसी घोषणा के आये दिन आपकी सन्तान को........ फिर आप लव जिहाद का रोना रोने लगते हैं। अपने रोग का निवारण तो आप करते नहीं।**

कुछ इधर की कुछ उधर की- कई प्रेमियों ने गत दिनों कई विषयों पर चर्चा चलाकर कई प्रश्न पूछे। सब पर विस्तार से तो नहीं लिखा जा सकता पर संकेत से इस उपशीर्षक के नीचे लिखा जायेगा। निष्काम व परिवर्तन में एक सुयोग्य भाई का लेख छपा है। उसमें भ्रमित होकर उस भाई ने एक भयङ्कर भूल करके लिखा है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी टोबा टेकसिंह गये। स्टेशन पर कुली-कुली पुकारा तो रुद्रानन्द स्वामी जी ने उनका सामान उठा लिया। यह सब कुछ इतिहास प्रदूषण करने वाला कर्म हो गया। रुद्रानन्द जी ने तो स्वामी जी के बलिदान के बहुत बाद में संन्यास लिया। मान्य लेखक ने यह प्रसंग मेरी एक पुस्तक से लिया है। मैंने तो लिखा था कि स्वामी रुद्रानन्द टोबा टेकसिंह गये थे। महात्मा प्रभु आश्रित कुली-कुली की पुकार सुनकर, चरण स्पर्श कर सामान उठाकर उनको समाज मन्दिर ले गये। रुद्रानन्द जी इससे पहले महात्मा जी से कभी मिले ही नहीं थे।

आर्य पत्रों के गिरते स्तर पर -श्री श्यामकिशोर जी प्रयाग जैसे विद्वान् ने भी चर्चा की। कुछ व्यक्ति अपना लेख छ: पत्रों में भेज देते हैं। पत्रों का स्तर गिरे क्यों न? दान पर चलने वाले पत्रों को पढ़ने वाले वही पाठक हैं। ऐसा करने से लेखकों की साख क्या बढ़ जाती है?

सुरूर बर्मा व पंजाब भी पहुँच-यह एक नई खोज समझिये। हमें प्रमाण मिला है कि श्री दुर्गा सहाय सुरूर लाला लाजपतराय के निष्कासन पर माण्डले भी गये। वहाँ उन पर एक कविता लिख डाली। ब्रेडला हॉल पर लिखी कविता उसे देखे बिना तो लिखी न जा सकती थी। वह पंजाब कैसे पहुँचे? इसके प्रमाण खोजने का प्रयास तो बहुत किया है। देखें कब सफलता मिलती है।

महर्षि दयानन्द के व्याख्यान गुजराती में भी छपे थे। वे कौनसे व्याख्यान थे? गुजरात के आर्यों ने इस दिशा में इतने लम्बे समय में कुछ नहीं किया। हमारा मत है ये पूना-प्रवचन नहीं हो सकते। ये गुजरात में दिये गये व्याख्यान ही हो सकते हैं। इसके प्रमाण हमने खोज लिये। श्री गोपालराव हरि ने गुजरात में ऋषि जी के दो-दो तीन-तीन घण्टे के रोचक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुने थे। टंकारा, रोजड़ में कुछ न कुछ होता है, परन्तु न जाने हमारे ये मान्य भाई इसमें रुचि क्यों नहीं लेते। हम किसी को कुछ कह भी नहीं सकते। मन में लगन हो, श्रद्धा हो तो ऐसे कार्य होते हैं। ये व्याख्यान मिल जायें तो यह बहुत बड़ा उपकार माना जायेगा।

अनेक व्यक्तियों ने पीएच.डी. कर रखी है, परन्तु आर्य समाज के सैद्धान्तिक प्रचार से बच-बच कर रहते हैं। क्या ऐसे व्यक्तियों को विरोधियों-विधर्मियों का उत्तर देते कभी सुना या देखा है?

हैदराबाद की दो देवियां- आर्य समाज व स्वराज्य संग्राम पर घिसी-पिटी बातें लिखने वालों ने कभी-भी हैदराबाद की दो आर्य नारियों पर एक भी शब्द नहीं लिखा। **निज़ाम पर बम फेंकने के लिये एक-विजय लक्ष्मी ने बिन मांगे अपने सब आभूषण उतारकर दे दिये। इन्हें बेचकर शस्त्र क्रय करके यह कार्य सिरे चढ़ाओ।**

वीर नारायणराव पवार की मंगेतर विजयलक्ष्मी ने देखा-जाना कि इसे फाँसी भी हो सकती है। उसने दृढ़ व्रत लेकर घोषणा कर दी कि यदि नारायण राव छूट गये, फाँसी से बच गये तो विवाह करूँगी नहीं तो आजीवन कुमारी ही रहूँगी।

उन वीर नारियों की-आग की चिन्गारियों को शत-शत नमन!

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा **श्री सत्यानन्द वेदवागीश** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ अक्टूबर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१७ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सोमपाल शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, श्री सज्जनसिंह कोठारी-लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री विनय आर्य-मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी- शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री कन्हैयालाल आर्य-गुरुग्राम, डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'-दिल्ली, डॉ. रामचन्द्र-कुरुक्षेत्र, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, डॉ. जगदेव-रोहतक, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. रूपकिशोर-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, डॉ. विनय विद्यालंकार, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन- तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	ओम मुनि
संरक्षक	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

दयानन्द-दर्शन

आचार्य उदयवीर शास्त्री

दार्शनिक क्षेत्र में अनेक शताब्दियों से यह भावना पनपती रही है कि न केवल वैदिक-अवैदिक दर्शनों में, अपितु छः वैदिक दर्शनों में भी परस्पर विरोध है। वर्तमान युग में इस अवाञ्छनीय विचारधारा को सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने चुनौती दी और दार्शनिक जगत् में इस क्रान्तिकारी तथ्य को उजागर किया, दर्शनों में कोई परस्पर विरोध नहीं, वे वस्तु तत्त्व के प्रतिपादन में एक-दूसरे के पूरक हैं।

उस क्रान्तदर्शी महर्षि ने अपने किसी अन्य दर्शन का प्रवचन नहीं किया, न कहीं यह संकेत ही दिया है कि अन्य कोई दर्शन अपेक्षित है। ऋषि ने इन्हीं प्रसिद्ध छः वैदिक दर्शनों को प्रामाणिक माना है और उन्हीं में अपनी आस्था प्रकट की है। वेदों पर आधारित अपने दार्शनिक विचारों को ऋषिवर ने इन्हीं दर्शनों का आश्रय लेकर अपनी रचनाओं में अपेक्षित प्रसंग आने पर अभिव्यक्त किया है। अनेक स्थलों पर वे विचार ऐसे हैं, जो दर्शनों की मध्यकालिक व्याख्याओं में उपलब्ध नहीं होते। इससे स्पष्ट होता है कि ऋषि दयानन्द दर्शनों की वास्तविक भावनाओं को समझने में उन भाष्यों से अभिभूत नहीं थे। उन्होंने अपनी स्वतन्त्र प्रतिभा एवं गुरु परम्परा से उन रहस्यमय गूढ़ तथ्यों को समझकर अपने दार्शनिक विचारों में उजागर किया है, जो मध्यकालिक दार्शनिक अखाड़ेबाजी की काली-पीली अन्धेरी (आंधी) में ओझल हो चुके थे।

इससे संकेत मिलता है कि ऋषि दयानन्द का कोई अतिरिक्त दर्शन नहीं है, वह इन्हीं दर्शनों को उस प्रकार व्याख्यात करने का अभिलाषी रहा, जो पारस्परिक विरोधी भावनाओं से अछूता हो। तत्त्वदर्शी ऋषि कभी अतथ्य बात नहीं कहता, क्योंकि वह तत्त्वार्थबोधन में आप्त होता है। दर्शनों के प्रवक्ता ऋषि ऐसे ही साक्षात्-कृतधर्मा 'आप्त' पुरुष थे, तब उनके कथनों में विरोध की सम्भावना कैसे हो सकती है?

भारतीय दर्शन वस्तुतः वैदिक-अवैदिक दो भागों में विभक्त माना जाता है। अवैदिक दर्शनों में चार्वाक-जैन-बौद्ध दर्शन है। वैदिक दर्शनों में छः की गणना की जाती है-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त। इनके यथाक्रम दो-दो के युगल को समान शास्त्र कहा जाता है, जो प्रतिपाद्य विषय की समानता अथवा सहयोगिता पर आधारित है। इनको वैदिक दर्शन इस आधार पर कहा जाता है कि इनमें आत्मसम्बन्धी तथा अनात्मसम्बन्धी वैदिक सिद्धान्तों का दार्शनिक रीति पर विवेचन एवं प्रतिपादन किया गया है। इन सभी दर्शनों में वेदों को समानरूप से प्रमाण माना गया है जबकि अवैदिक दर्शनों में ऐसा नहीं है। आत्म-अनात्मसम्बन्धी तत्त्वों से तात्पर्य स्वतन्त्र जड़-चेतन तत्त्वों की सत्ता स्वीकार करने से है।

अनेक आधुनिक विचारक वैदिक-अवैदिक दर्शनों को 'आस्तिक-नास्तिक दर्शन' के नाम से प्रस्तुत करते हैं। उक्त न्याय आदि छः आस्तिक दर्शन हैं तथा जैन, बौद्ध, चार्वाक नास्तिक दर्शन, परन्तु हरिभद्र सूरि ने अपनी रचना 'षड्दर्शन समुच्चय' में इसका व्यतिक्रम किया है। उसने जिन छः दर्शनों का अपने ग्रन्थ में विवरण प्रस्तुत किया है, उनके नाम हैं-आर्हत (जैन), बौद्ध, न्याय, वैशपिक, सांख्य, मीमांसा। इनमें वैदिक छः दर्शनों में से 'योग' तथा 'वेदान्त' का नाम नहीं है। प्रस्तुत ग्रन्थ के उपसंहार भाग से यह स्पष्ट होता है कि हरिभद्र सूरि किन दर्शनों को आस्तिक तथा किनको नास्तिक मानता है। ग्रन्थ के अन्तिम भाग में उक्त छः दर्शनों का विवरण प्रस्तुत करने के अनन्तर यह आशंका प्रस्तुत की गई है कि अनेक विद्वान् न्याय और वैशेषिक दर्शनों को एक ही दर्शन मानते हैं, उनके मत में यह विवरण पांच दर्शनों का ही रह जाता है, तब यह रचना 'षड्दर्शन-समुच्चय' कैसे कही जा सकती है?

छठे दर्शन मीमांसा का विवरण प्रस्तुत करने के अनन्तर ग्रन्थकार ने कहा-

जैमिनीयमतस्यापि संक्षेपोऽयं निवेदितः।
एवमास्तिकवादानां कृतं संक्षेपकीर्त्तनम्।।७७।।

इसके अनन्तर छः संख्या पर आशंका प्रस्तुत की

गई-

नैयायिकमतादन्ये भेदं वैशेषिकैः सह।

न मन्यन्ते मते तेषां पञ्चैवास्तिकवादिनः।। ७८।।

इसका समाधान करते हुए छः संख्या की पूर्ति के लिये ग्रन्थकार कहता है-

षष्ठदर्शनसंख्या तु पूर्यते तन्मते किल।

लोकायतमतक्षेपात् कथ्यते तेन तन्मतम्।। ७९।।

छठे दर्शन की पूर्ति उनके मत में लोकायत (चार्वाक) दर्शन को सम्मिलित कर लेने से हो जाती है, अत: उस दर्शन का कथन अब कर देते हैं।

हरिभद्र सूरि के उक्त श्लोकों में रेखाङ्कित पद विशेष ध्यान देने योग्य है। अपने ग्रन्थ में विवृत्त दर्शनों को वह 'आस्तिकवादी दर्शन' बता रहा है जिनको हम 'नास्तिक दर्शन' कहते हैं-जैन, बौद्ध, चार्वाक, हरिभद्र सूरि उनको 'आस्तिक दर्शन' मानता है। इससे स्पष्ट होता है, आस्तिक और नास्तिक पदों को प्रत्येक वर्ग यथाक्रम अपने और पराये के लिये प्रयुक्त करता रहा है। इसलिए किसी नियत वर्ग को बताने में इन पदों का प्रयोग उपयुक्त नहीं है।

प्रसंगवश यह विचारणीय है कि हरिभद्र सूरि ने उन दर्शनों को अपने वर्ग में किस आधार पर गिना है, जिनको हम आस्तिक दर्शन कहते हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा को जिस आधार पर हम आस्तिक दर्शन कहते हैं, निश्चित ही वह आधार सूरि के आस्तिक दर्शन का नहीं है। अन्यथा सभी दर्शन आस्तिक कहे जाते अथवा सभी नास्तिक। वस्तुत: हरिभद्र के आस्तिकवाद का आधार 'अनीश्वरवादी' होना है। दर्शनों के मध्यकालिक व्याख्याकारों ने सांख्य, मीमांसा, वैशेषिक आदि को निरीश्वरवादी दर्शन समझकर उनके व्याख्यान किये हैं। उन दर्शनों के विषय में वेदानुयायी विद्वानों की भी अभी तक ऐसी ही धारणा है। चार्वाक, बौद्ध, जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को स्वत: स्वीकार नहीं करते। जैन-मतानुयायी हरिभद्र सूरि ने इसी आधार पर उन दर्शनों को अपने वर्ग में गिना है।

जिन मध्यकालिक व्याख्याकारों ने सांख्य आदि दर्शनों की निरीश्वरवादी व्याख्या की है, उन्होंने भी इस तथ्य को पूर्णरूप से स्वीकार किया है कि ये सभी दर्शन एक स्वर से वेद को निर्भ्रान्त प्रमाण मानते हैं। इसलिए इन दर्शनों को 'वैदिक' दर्शन कहना अधिक उपयुक्त है। इनसे अतिरिक्त दर्शन अवैदिक हैं। यद्यपि महर्षि दयानन्द ने अपनी रचनाओं में इस वास्तविकता को भी बलपूर्वक प्रमाणित किया है कि सांख्य आदि दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को पूर्णरूप से स्वीकार करते हैं।

दर्शनों के विभाग का यह आधार माने जाने पर वैदिक एवं अवैदिक दर्शनों के प्रतिपाद्य विषय, विचार-प्रणाली तथा तत्त्व-प्रतिपादन की पद्धति में परस्पर अनुकूलता न हो, यह स्वाभाविक है, पर वैदिक कहे जाने वाले दर्शनों में भी मुख्य विषयों तक में विरोध की संभावना की जाये तो यह अत्यन्त विचारणीय हो जाता है। प्रक्रिया के साधारण या छोटे-मोटे आभास्यमान विरोध की उपेक्षा की जा सकती है। यदि इतना भी न हो तो दर्शनों की छः संख्या ही निराधार हो जाय, सब कुछ समान होने पर तो दर्शन एक ही मान लिया जाय। पर जब मुख्य विषय का भेद सामने आता है तो समस्या खड़ी हो जाती है। यदि दर्शनशास्त्रों में परस्पर ऐसा भेद वास्तविक है और यह सब प्रतिपादन वेदमूलक है जो एक वैदिक दर्शन में होना चाहिये, तो यह भेद-सूत्र वेद तक जा पहुँचता है। यदि वहाँ पर भी दार्शनिक भित्ति के इतने भेद विद्यमान हैं तो वेद अमान्यता की कोटि में प्रवेश पा सकते हैं। सच्चाई सदा एक है। विरुद्धार्थक प्रतिपादक शास्त्र की मान्यता कैसे सम्भव हो सकती है? इन शास्त्रों के प्रवक्ताओं का साक्षात्कृतधर्मा तथा आप्त होना भी सन्देह में पड़ जाता है।

बौद्धदर्शन के अभ्युत्थान काल में वैदिक दर्शनों में पारस्परिक विरोधी भावनाओं को उभारने का विभिन्न प्रकारों से प्रयत्न किया गया, जो प्रचार की प्रबलता एवं कालिक अवसर पाकर बद्धमूल हो गया और अनन्तरवर्ती आचार्यों द्वारा उसी छाया में दर्शनों के व्याख्यान होते रहे। इन व्याख्याकारों ने उन विचारों को पर्याप्त हवा दी वह एक ऐसा रूप खड़ा हो गया, जिसके प्रतिकूल कुछ भी कहने का कोई आचार्य उस समय साहस नहीं कर सकता था। कुमारिल, शङ्कर, रामानुज सदृश मुनिकल्प प्रकाण्ड विद्वानों ने भी खुंदी हुई पद्धति का ही अनुगमन किया। अब ऐसा प्रतीत होता है कि कदाचित् ये आचार्य उस क्रान्तदर्शिता

के उच्चस्तर पर पहुँचने से वञ्चित रह गये, प्रशस्त पथ-निर्माण की क्षमता के लिए जिसकी अपेक्षा रहती है। यद्यपि इन महान् आत्माओं ने अपने समय में वैदिक धर्म की सेवाओं के लिए अपना जीवन तक अर्पण कर अत्यन्त अभिनन्दनीय प्रयास किये।

पिछली अनेक शताब्दियों में सबसे पहला महामानव महर्षि दयानन्द हुआ है, जिसने दर्शनों की इस दिशा पर गम्भीरता से दृष्टिपात किया और घोषणा की कि वैदिक दर्शनों में तथाकथित पारस्परिक विरोध की उद्भावना करना नितान्त भ्रान्तिमूलक है। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में एक स्थल पर लेख है-

''(पूर्वपक्ष) सृष्टि विषय में.....शास्त्रों का अविरोध है वा विरोध? (उत्तरपक्ष) अविरोध है। (पूर्वपक्ष) जो अविरोध है तो.........मीमांसा में कर्म, वैशेषिक में काल, न्याय में परमाणु, योग में पुरुषार्थ, सांख्य में प्रकृति और वेदान्त में ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानी है। अब किसको सच्चा और किसको झूँठा मानें? (उत्तरपक्ष) इसमें सब सच्चे, कोई झूँठा नहीं। झूँठा वह है जो विपरीत समझता है। ....विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्ध वाद होवे। छः शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है। **मीमांसा में**-ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नही होता कि जिसके बनाने में कर्म चेष्टा न की जाये। **वैशेषिक में**- समय न लगे बिना बने ही नहीं, **न्याय में**- उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता, **योग में**- विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाये, तो नहीं बन सकता, **सांख्य में**-तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता और **वेदान्त में**- बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके। इसलिये सृष्टि छः कारणों से बनती है। उन छः कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। इसलिये उनमें विरोध कुछ भी नहीं।''

यह एक दिग्दर्शनमात्र है। इस लेख द्वारा महर्षि ने उस निर्बाध दिशा की ओर संकेत किया है। यदि इस सांकेतिक सुझाव के अनुसार गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाये तो दर्शनों में भ्रमपूर्ण भावनाओं से उद्भावित उस तथाकथित भेद की घाटी को आसानी से पार किया जा सकता है। कोई भी विचारशील विद्वान् यह अनायास समझ सकता है कि वैदिक दर्शनों की रचना परस्पर विरोधी अर्थों का प्रतिपादन करने के लिये नहीं हुई, प्रत्युत अपने मुख्य प्रतिपाद्य विषय का विशद विवरण प्रस्तुत करते हुए उस अंश में अन्य शास्त्रीय अर्थों की पूर्ति के लिये हुई है।

दर्शनों का उद्देश्य सृष्टि रचना की प्रक्रिया को पूर्णाङ्गरूप में प्रस्तुत करना है। ऋषि ने संकेतमात्र से उस पद्धति को सुझाया, जिसके अनुसार विवेचन करते हुए सृष्टि के उन आंशिक विवरणों को एक-एक दर्शन में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

वैशेषिक में कणाद ने सृष्टि रचना के केवल उन तत्त्वों तक विवेचन प्रस्तुत किया है, जो मानव अथवा प्राणिमात्र के चारों और फैले स्थूल जगत् के सीधे सन्निहित उपादान तत्त्व हैं। यह आधिभौतिक जगत् का स्थूल विवेचन है। अन्य दर्शनों के प्रतिपाद्य विषय का निषेध नहीं।

सांख्य में कपिल ने उन उपादान तत्त्वों की अन्तिम सीमा तक विवेचना प्रस्तुत की है। कणाद अपने विवेचन को पृथिवी आदि के सूक्ष्म कण तक ले जाकर छोड़ देता है। वह इतना ही पाठ सिखाना चाहता है। आगे के पाठ का वह निषेध नहीं करता। कपिल के शिक्षाकेन्द्र में वह पाठ अन्तिम सीमा तक पूरा किया जाता है। जैसे पृथिवी आदि परमाणु से स्थूल पृथिवी उभरती है, वैसे ही वह परमाणु भी अपने मूल कारणों से परिणत होता हुआ पृथिवी-कण (परमाणु) के रूप में उभर आता है।

सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास से जो सन्दर्भ प्रथम उद्धृत किया गया है, उसी के आगे ऋषि ने एक संस्कृत-सन्दर्भ इस प्रकार लिखा है-

''नित्यायाः सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थायाः प्रकृतेरुत्पन्नानां परमसूक्ष्माणां पृथक् पृथग्वर्त्तमानानां तत्त्वपरमाणूनां प्रथमः संयोगारम्भः, संयोगविशेषादवस्थान्तरस्य स्थूलाकारप्राप्तिः सृष्टिरुच्यते।''

शेष भाग अगले अंक में.....

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारी पत्रिका कार्यालय से निरन्तर भेजी जाती है, फिर भी जिन लोगों के पास पत्रिका का कोई अंक प्राप्त ना हुआ हो तो कृपया पत्र या दूरभाष द्वारा हमें सूचित करें, ताकि हम वह अंक पुनः भेज सकें, साथ ही अपने डाकघर में इसकी जाँच आदि भी करें।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित सभा है एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिय कृत संकल्प है। सभा द्वारा ऋषि के स्वनानुरूप गुरुकुल, संन्यास एवं वानप्रस्थाश्रम, ध्यान शिविर, वैदिक साहित्य का प्रकाशन, देश में प्रचार, परोपकारी पत्रिका के माध्यम से जन जागरण, भव्य अतिथिशाला, भोजनशाला आदि अनेक प्रकल्पों का संचालन हो रहा है। ये सभी कार्य आर्यजनों के सात्विक दान से ही होते हैं। अतः दानी महानुभावों से निवेदन है कि वेद, ईश्वर, दयानन्द के इस कार्य में अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें।

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्त्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

महर्षि-महिमा

- पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

'पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति' के नाम से ही स्पष्ट है कि आप आर्यसमाज के अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी, तार्किक वक्ता थे। स्वतन्त्रता अन्दोलन में सक्रिय भूमिका के कारण आपको जेल की यातनायें भी सहनी पड़ीं। शहीदे-आजम सरदार भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आप ही ने कराया था। विद्वत्ता के साथ-साथ काव्य रचना पर भी आपका अद्वितीय अधिकार था। ऋषि दयानन्द के गुणगान में काव्य लिखकर उन्होंने अपने कवित्व पर चार चाँद लगा लिये। उनकी यह काव्य रचना अलग ही है-संस्कृत और हिन्दी का मिश्रण। जो संस्कृत नहीं जानते उन्हें भी यह रचना सहज ही आकर्षित करेगी, वे भी इस काव्य रस का आनन्द ले पायेंगे। हमारे आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी जैसा काव्य का पारखी पण्डित शिरोमणि यदा-कदा ऋषि-भक्ति की मस्ती में इसे जब झूम-झूम कर गुनगुनाया करता था तो पास बैठा व्यक्ति भी उन्हें सुनकर भावविभोर हो जाता था। - **सम्पादक**

दीक्षाम्प्राप्य वरान् गुरोर्मधुपुरे, दंडी महाराज से।
पाखण्डोच्चय खंड-खंड करणी, गाड़ी ध्वजा कुम्भ में।।
ध्वस्ताऽनर्थकरी प्रपंच सरिता, सत्यार्थ-धारा बही।
सर्वैषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१।।

भावार्थ- श्री गुरु दंडी विरजानन्द जी महाराज से दीक्षा तथा वरों को प्राप्त करके, पाखण्ड के समूह को खंड-खंड करने वाली ध्वजा हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर (सं. १९२४) में गाड़ दी और प्रचार प्रारम्भ कर दिया। इसके प्रभाव से अनेक अनर्थ करने वाली, छल-कपट द्वारा भ्रमजाल फैलाने वाली, पाप की नदी नष्ट-भ्रष्ट हो गई और सत्यार्थ की धारा बहने लगी अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार होने लगा। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

सर्वेशोऽस्ति समग्र-विश्वजनकः, बेटा किसी का नहीं।
सर्वास्ता अवतार-धारणा-कथाः, गप्पें बताने लगे।।
पाषाणादिक मूर्त्तयः कृतिकलाः, देवत्व जाता रहा।
सर्वैषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।२।।

भावार्थ- महर्षि के प्रचार का प्रभाव यह हुआ कि लोगों के विचार पलटने लगे कि परमात्मा सारे संसार का पिता ही है, किसी का पुत्र नहीं है। परमात्मा के अवतार धारण की सारी कथाओं को गप्पें समझा जाने लगा। पत्थर, धातु, मृतिका तथा काष्ठ की बनी मूर्तियाँ कुशल शिल्पियों की कार्य-निपुणता का स्वरूप मानी जाने लगीं। उनमें से देवत्व की भावना जाती रही। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

वर्णाः कर्म-गुण-स्वभाव-फलतः मानें वृथा जन्म को।
सेवा जीवित मान्य पूर्वज-हिता, पीछे किया श्राद्ध क्या?
तीर्थं साधुसमागमो न सलिलं, ऐसा लगे मानने।
सर्वैषाः करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।३।।

भावार्थ- ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्ण गुण-कर्म-स्वभाव से माने जाने लगे और केवल जन्म के आधार पर ब्राह्मणादि वर्णों को मानना व्यर्थ समझा जाने लगा। जीवित एवं मान्य पूर्वजों की सेवा करना ही हितकर माना जाने लगा। मरने पर उनके निमित्त से श्राद्ध करने पर आक्षेप होने लगे। गंगादि नदियों के जलों को ही तीर्थ न मानकर उन-उन नदियों के तटों पर रहने वाले धर्मात्मा साधुओं को ही वास्तविक तीर्थ माना जाने लगा। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

बाल्ये नो गृहिणो भवन्तु मनुजाः, ऐसी प्रथा हो गई।
उद्वाहाः सुपरीक्षिताः प्रचलिताः, खन्ने खुराणे हट गये।।
वैधव्यं विधवाभिलाष परकं, चाहें गृहस्थी करें।
सर्वैषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।४।।

भावार्थ- बालकपन में नर-नारी गृहस्थ न बन सकें ऐसी मर्यादा स्थिर हो गई। ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों के विवाह शिक्षा-बल-चरित्र-कुल आदि की पूरी परीक्षा के पश्चात् ही होने लग गये, खन्ने-खुराणे आदि जाति-बन्धन सब हट गये। विधवाओं का विधवापन में रहना उनकी इच्छाओं पर निर्भर होगा। यदि वे चाहें तो उनके गृहस्थिनी बनने में कोई बाधा नहीं रही। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

स्त्री-शूद्राध्ययनं विरोधरहितं, सारे पढ़ाते उन्हें।
स्पृश्यास्पृश्यविधेः समाप्तिरभवत्, भाई बने आपसे।।

पूर्वं ये यवनादि शोधरिपवः, वे भी करें शुद्धियां।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।५।।

भावार्थ- 'स्त्री शूद्रौनाधीयाताम्' इस मनः कल्पित वाक्य के आधार पर स्त्रियों और शूद्रों के पठन-पाठन का जो विरोध किया जाता था, वह समाप्त हो गया। अब उन्हें सब पढ़ाने लग गये हैं। छूत-छात का प्रकार सर्वथा समाप्त हो गया है, सब उनको अपने जैसा और भाई मानते हैं। पहले जो मतवादी लोग यवन-ईसाई आदियों की शुद्धि का विरोध किया करते थे, वे सब स्वयं भी शुद्धियाँ करने लग गये हैं। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

त्रस्ता जीवन-लोलुपाः कुमतयः, जो मस्जिदों में घुसे।
द्रव्यार्था ललनेच्छुका हतधियः, गिर्जाघरों में धंसे।।
स्नातुं वैदिकपुण्यसागरजले, लौटे चले आ रहे।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।६।।

भावार्थ- जो लोग जीवन के लोभी अपनी चमड़ी बचाने के कारण भयभीत होकर मस्जिदों में जा घुसे थे और जो लोग धन तथा स्त्रियों को प्राप्त कराने की कामना से गिरजाघरों में जा धँसे थे, वे सबके सब वैदिक-धर्मरूपी पवित्र सागर के जल में स्नान करने की कामना अर्थात् पुनः शुद्ध हो जाने की इच्छा से अपने प्राचीन धर्म में दीक्षित होने के लिए लौटे चले आ रहे हैं। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

यात्राया उदधे निवारणमतिः, पाताल में जा छुपी।
सिद्धाः साधकभूत भैरवगणाः, चुप्पी लगाये पड़े।।
ज्योतिष्यं गणनार्थकं ग्रहफलं, है स्वार्थ की साधना।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।७।।

भावार्थ- समुद्र यात्रा पर प्रतिबन्ध लगाकर समुद्र यात्रा करने वालों को जाति बहिष्कृत करने वाली बुद्धि अब पाताल में जाकर छुप गई है। सिद्ध साधक-भूत और भैरव आदि गण सब चुप्पी लगाकर पड़ गये हैं। ज्योतिष् शाला का गणित-भाग ही प्रमाण कोटि में माना जाने लगा है। अब फलित ज्योतिष् के आधार पर सूर्य आदि ग्रहों का फल स्वार्थ की साधना समझी जाने लगी है। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

भद्रा शूलममोघ योगकरणे, पूछे न जाते कहीं।
धूर्त्तान् वेशधरान् विभिन्नतिलकान्, धक्के लगे मारने।।
कन्यानां क्रयणं विषाक्त-हननं, भी लुप्त होने लगे।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।८।।

भावार्थ- मुहूर्त्तादि पूछने में भद्रा, दिक्शूल तथा मानने वालों के मतानुकूल अमोघ फल देने वाले योग और करण- इनकी पूछ समाप्त-सी हो चुकी है। नाना प्रकार के वेश बनाकर, भिन्न-भिन्न प्रकार के तिलक लगाकर ठगने वाले धूर्त्तों को अब धक्के लगाए जाते हैं। कन्याओं का बेचना तथा उनको घोर विष देकर मार देने की प्रथा भी समाप्त हो चुकी है। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

अन्या या भुवने कुचक्र ततयः, रोकी गई यत्न से।
कृत्वा तथ्य-विधायिनीं स्व-रचनां, स्थायी किया धर्म को।।
सत्तां वीक्ष्य विदेशिनां स्व-सदने, सोचा बड़े ध्यान से।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।९।।

भावार्थ- इसी प्रकार और भी संसार में जो कुचक्रों की भरमार थी, वह प्रायः सब-की-सब रुकती चली जा रही है। इसके अतिरिक्त सत्यधर्म की स्थापना करने वाले तथा सत्य का प्रकाश करने वाले महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ की रचना करके वैदिक-धर्म को स्थिर रूप दिया। ऐसा हो जाने पर राजनीति पर भी दृष्टिपात करके देखा कि हमारे घर भारत में तो विदेशियों की राजसत्ता है, इस पर बड़ी गम्भीरता से विचार किया। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

दासत्वाद्धि निजाधिकार ममता, थी नष्ट-सी हो चुकी।
धर्माधर्म रहस्यबोधरहिताः, आत्माभिमानी हुए।।
स्वातन्त्र्यं विकृतं तथापि सुहितं, की सत्य की घोषणा।।
सर्वेषां करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१०।।

भावार्थ- राजनीति पर गम्भीर विचार करने के पश्चात् अपना विचार स्थिर किया कि चिरकालीन दासता के कारण अपने अधिकारों की ममता नष्ट-सी हो चुकी है। जो भारतीय आत्माभिमानी थे, वे धर्म और अधर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने में भी असमर्थ हो रहे हैं। यह जानकर गर्जना करके राजनैतिक सत्य की घोषणा की कि स्वदेशी राज्य चाहे कितना भी हानिकारक हो, परन्तु विदेशियों के राज्य से अच्छा है अर्थात् विदेशी अच्छे से अच्छा भी त्रुटियों से युक्त स्वदेशी राज्य की तुलना नहीं कर सकता। यह सारी

करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

ज्ञात्वा सार समन्वितां ध्वनिमिमां, चेते उठे भारती।
कारागार-निषेवणं च मरणं, झेलीं कड़ी व्याधियां।।
प्राप्तं त्यागबलात्स्वराज्यमचलं, भागी पराधीनता।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।११।।

भावार्थ- महर्षि दयानन्द जी की इस सारयुक्त ध्वनि को सुनकर भारतवासी सचेत होकर स्वराज्य प्राप्ति के लिए उठ खड़े हुये। आन्दोलन के फलस्वरूप कारावासादि मरण-पर्यन्त कड़ी से कड़ी व्याधियां झेलीं। इतने बड़े त्याग तथा तपस्या का फल अचल स्वराज्य प्राप्त किया और पराधीनता भाग गई। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

संख्यायामधिकाः स्वराज्य-समरे, आर्य जने थे सभी।
तैरेवं यतितं यथा सफलता, हो प्राप्त, सो हो गई।।
साफल्ये करणीय कार्यमखिलं, सोचें बड़े ध्यान से।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१२।।

भावार्थ- स्वराज्य प्राप्ति के भीषण संग्राम में महर्षि दयानन्द जी के भक्त आर्यों की सबसे अधिक संख्या थी। (पिच्चासी प्रतिशत) उन्होंने ऐसा यत्न किया कि जिससे सफलता प्राप्त हो जाए, सो प्राप्त हो गई। स्वराज्य प्राप्ति कर क्या-क्या कार्य करना चाहिए, इस पर बड़े सावधान होकर ध्यान से सोच रहे हैं और कर्त्तव्य करने को तत्पर हो रहे हैं। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

गौरांगाः यवनाश्च देशदलनाः, निस्तेज हो जा चुके।
स्वाधीने गुणमान शौर्य बहुले, हिन्दी चली राज में।।
आर्याचार-विचार गौरव यशः, आगे बढ़ेंगे अभी।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१३।।

भावार्थ- इस समय भारतवर्ष से अंग्रेज और यवन अर्थात् मुसलमान तेजहीन होकर जा चुके हैं। अब गुणमान और वीरतादि से परिपूर्ण स्वाधीन भारत में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया और चलाया गया है। विश्वास है कि नवीन भारत में आर्यों के आचार-विचार, गौरव और यश अभी उत्तरोत्तर आगे बढ़ेंगे। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

गोघातं मदिरां विलासवनिताः, रोको इन्हें दण्ड से।
राष्ट्रे सांस्कृतिकं स्वकीय चरितं, चालू करो धैर्य से।।
शिक्षाढ्याः कुशलाः पुनन्तु पदवीः, मांगें हुईं न्याय से।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१४।।

भावार्थ- स्वराज्य प्राप्ति में जिस प्रकार महर्षि दयानन्द जी के भक्तों ने पूर्ण प्रयत्न किया, उसी प्रकार अब उनकी ओर से निम्नलिखित समुचित तथा न्यायसंगत मांगें भी हो रही हैं कि गौहत्या, मदिरादि मादकद्रव्य तथा वेश्यावृत्ति आदि कुकर्मों को दण्ड द्वारा रोका जाए तथा स्वतन्त्र भारत में भारतीय संस्कृति और भारत के पूर्वजों का चरित्र धैर्य से चालू किया जाए अर्थात् प्रसन्न करने के लिए अपनी संस्कृति का परित्याग न किया जाए और पदवियाँ तथा प्रतिष्ठा के स्थान, शिक्षा और कार्य कुशलता के आधार पर ही पूर्ण किये जायें, किसी जाति विशेष के आधार पर नहीं। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की है।

संसारे निज भारत-प्रणिधयः, जा राजदूतो करें।
तेषां देशनिवासिनामपि जनाः, आयें यहाँ दूत हो।।
सत्कर्त्तुं समुपाह्वयन्ति सततं, पातालवासी हमें।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१५।।

भावार्थ- अब जो समग्र-संसार में अपने भारतीय स्वतन्त्र भारत के प्रतिनिधि भेजे जा रहे हैं तथा भारत में उन देश के प्रतिनिधि राजदूत बनकर आ रहे हैं और भारत का सम्मान करने के लिए अमेरिका आदि देशों में भारतीय राज्य-संचालकों को निमन्त्रण दिए जा रहे हैं। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

याकांक्षर्षिवरेण चेतसि कृता, हे नाथ सो दूर है।
किन्तु स्वार्थ विवर्जिताः सुनिपुणाः, जो लोक संघी डटे।।
खञ्जाश्वं विकलं प्रताड्य कशया, दौड़ाय लेंगे कभी।
सर्वेषा करुणा विवेकजलधेः, स्वामी दयानन्द की।।१६।।

भावार्थ- हे जगत् स्वामिन्! स्वराज्य के संबन्ध में जो उच्च अभिलाषा ऋषिवर स्वामी दयानन्द साधु ने अपने मन में धारण की थी सो तो अभी दूर दिखाई देती है। किन्तु उसे निकटतर लाने के लिये सर्व प्रकार के स्वार्थ से रहित तथा उपचार करने में निपुण, जो लोक-संघी लोग अर्थात् ऋषि दयानन्द के भक्त-जन, वास्तविक स्वराज्य को लाने के लिए इस क्षेत्र में डट गये हैं वे अवश्यमेव, इस लंगड़ाते हुए तथा भ्रम-चक्र में पड़े हुए स्वराज्य-रूपी घोड़े को कभी न कभी दौड़ा ही लेंगे और सफल हो जायेंगे। यह सारी करुणा ज्ञान के सागर स्वामी दयानन्द जी की ही है।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. **सत्यार्थ प्रकाश में क्या है?** **लेखक** - **प्रो. धर्मवीर,** **प्रकाशक**- परोपकारिणी सभा, अजमेर, **पृष्ठ संख्या**- ३२ **मूल्य** - रु. १५/-

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. धर्मवीर जी के युवापन की रचना है। इस पुस्तक को पं. भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु) ने डॉ. धर्मवीर जी से आग्रहपूर्वक लिखवाया था। पहली बार इसे सन् १९७५ में महात्मा वेदभिक्षु जी ने ही प्रकाशित किया था। एक लम्बे अन्तराल के बाद परोपकारिणी सभा ने इसका पुनर्प्रकाशन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर नये से नया व्यक्ति भी सत्यार्थप्रकाश के महत्व को समझ सकता है अर्थात् यह पुस्तक आर्यसमाज के प्रचार में सहायक सिद्ध हो सकती है। आर्य महानुभावों से अनुरोध है कि इसे अधिक से अधिक संख्या में खरीदकर नई पीढ़ी तथा नये लोगों को वितरित करें तथा प्रकाशकों से भी निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में इसे मंगायें ताकि लोग इसे खरीद सकें। इस ग्रन्थ को पढ़ने से ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। सत्यार्थप्रकाश की समस्त विषयवस्तु को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। पाठक इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

२. **महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (दो भाग में)**

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. **'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित**

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिलजले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. **इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६**

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. **असली महात्मा (हिन्दी)** **मूल्य - रु. २००/-** **पृष्ठ संख्या - २४७**

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

एकता सम्मेलन के १४० वर्ष

दिल्ली दरबार १८७७ में महर्षि दयानन्द की ऐतिहासिक पहल

डॉ. रामचन्द्र, कुरुक्षेत्र

आज से १४० वर्ष पूर्व १ जनवरी १८७७ को ब्रिटिश सरकार ने भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय लॉर्ड लिट्टन के नेतृत्व में दिल्ली दरबार (Imperial Durbar) का आयोजन किया था। इस अति-विशिष्ट दरबार का आयोजन इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया द्वारा भारत की साम्राज्ञी (Empress of India) का पद ग्रहण किये जाने के उपलक्ष्य में किया गया था। पराधीन भारत के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सरकारी कार्यक्रम था। इसके माध्यम से ब्रिटिश सत्ता के भारत में अपार वैभव और शक्ति को प्रदर्शित किया गया था। दरबार में देशभर के सभी महत्त्वपूर्ण राजा, महाराजा, अधिकारी एवं विशिष्ट जनों को आमन्त्रित किया गया था। इस दरबार का आयोजन दिल्ली के (Coronation Park)में किया गया था। इस समारोह में तत्कालीन भारत के वायसराय (Lord Lytton)सहित प्राय: ७००० लोग सम्मिलित हुए। इनमें भारत के सभी प्रमुख राजागण और विशिष्ट अधिकारी भी शामिल थे।

महर्षि दयानन्द की अपूर्व पहल- भारत में नवजागरण के प्रणेता महर्षि दयानन्द चैत्र शुक्ल पञ्चमी, १९३२ तदनुसार १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना कर अपनी वैचारिक क्रान्ति की आधारशिला रख चुके थे। अपनी कालजयी रचना सत्यार्थ प्रकाश में भी स्वामी जी विदेशी शासन के सन्दर्भ में अपना अभिमत १८७५ में ही निम्न शब्दों में स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया था-''**कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।**''

पराधीन भारत में स्वदेशी राज्य का यह पहला उद्घोष था। एक अन्य स्थान पर भी सत्यार्थ प्रकाश में अंग्रेजों की कटु आलोचना करते हुए उस देशभक्त विद्रोही संन्यासी ने लिख दिया था- ''जब संवत् १९१४ (१८५७ ई.) के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं, तब मूर्ति कहाँ गई थी? जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।''

सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण, १८७५) के ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों के अत्याचार की एक ऐतिहासिक घटना की कड़ी आलोचना की थी- ''अंग्रेजों से भी एक काम अच्छा नहीं हुआ कि जो चित्रकूट के पर्वत पर महाराज अमृतराय जी के पुस्तकालय को जला दिया। उसमें करोड़ों रुपये के लाखों अच्छे-अच्छे पुस्तकें नष्ट कर दिये।'' यद्यपि इस घटना का उल्लेख सम्पूर्ण सन्दर्भ इतिहास में प्राप्त नहीं होता। इसका भी अनुसन्धान होना चाहिए।

देश की पराधीनता से सन्तप्त और नाना प्रकार की धार्मिक कुरीतियों से आहत भारतीय जनता के सम्पूर्ण समुद्धार के लिए महर्षि दयानन्द को इस विराट् आयोजन में आशा की एक किरण दिखाई दी।

आधुनिक भारत के निर्माता और महान् स्वप्नद्रष्टा महर्षि के अन्तर्मन में इस अति-विशिष्ट आयोजन से दो लक्ष्य प्रमुख रूप से अभीष्ट थे। प्रथम तो वे चाहते थे कि सम्मेलन में उपस्थित सभी राजा, महाराजा, सेठ-साहूकार, सामन्त वर्ग एवं आम जनता को सम्बोधित कर उन्हें राष्ट्रोद्धार के महनीय कार्य से जोड़ने का प्रयत्न किया जाये। वे जानते थे कि वहाँ पर देशभर के विविध विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग बड़ी संख्या में सम्मिलित होंगे। देशहित, समाज-सुधार, राष्ट्रीय एकता और स्वदेश स्वातन्त्र्य के विचारों को प्रस्तुत करने का इससे सुन्दर अवसर दुर्लभ ही था। अपूर्व दूरदर्शी तपोधन ऋषि का दूसरा लक्ष्य भी बहुत विराट् और व्यापक चेतना से सम्बद्ध था। महर्षि तत्कालीन

सभी प्रसिद्ध समाज-सुधारकों और भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के अग्रणी महानुभावों से वेद को ईश्वरीय ज्ञान के रूप में स्वीकार करने तथा भारतीय परम्परा के मौलिक तत्त्वों को सखाभाव से हृदयंगम कर, पारस्परिक मतभेद दूर करके धार्मिक एकता स्थापित करने हेतु प्रेरित करना चाहते थे।

महर्षि का दिल्ली में पदार्पण- अपने उक्त लक्ष्यों को सिद्ध करने के लिए संकल्पबद्ध महर्षि ने छलेसर और अलीगढ़ होते हुए दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। दिल्ली दरबार की निर्धारित तिथि १ जनवरी १८७७ से पर्याप्त पहले १७ दिसम्बर, १८७६ को वे दिल्ली पहुँच गये थे। इससे उनके मन में इस आयोजन के प्रति दृढ़ उत्सुकता का ज्ञान होता है।

महर्षि के परम भक्त ठाकुर मुकुन्दसिंह ने महर्षि के वहाँ पहुँचने से पहले गाड़ी, घोड़े और डेरे आदि भेज दिये तथा दिल्ली से दक्षिण की ओर अवध और काश्मीर के राजाओं के कैम्प के पास एक उद्यान में उनके निवास की व्यवस्था कर दी। महर्षि का यह निवास अजमेरी दरवाजे से दक्षिण-पश्चिम की ओर गुड़गांव (गुरुग्राम) जाने वाली कुतुब की सड़क पर शेरमल के अनारबाग में बनाया गया था। इस बाग के द्वार पर एक सूचना पट्ट लगाकर उस पर '**स्वामी दयानन्द सरस्वती का निवास-स्थान**' शब्द अंकित करवा दिए थे। महर्षि के साथ निम्न महानुभाव भी वहां पर विराजमान थे- १. राजा जयकिशनदास सी.एस.आई. २. ठाकुर मुकुन्दसिंह रईस-छलेसर ३. ठाकुर गोपालसिंह रईस-कर्णवास ४. हकीम रामप्रसाद, अलीगढ़ ५. ठाकुर नयनसुख ६. मुंशी इन्द्रमणि, रईस-मुरादाबाद ७. ठाकुर भोपाल सिंह, रईस-दिल्ली ८. ठाकुर किशन सिंह, कर्णवास ९. पण्डित भीमसेन १०. बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि और ११. खजांची लक्ष्मी नारायण, रईस-बरेली।

महर्षि ने एक विज्ञापन प्रकाशित कराया, जिस पर सभी को धर्मचर्चा करने के लिए निमन्त्रण देते हुए सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य के ग्रहण करने का आग्रह किया गया था। इस विज्ञापन को दिल्ली नगर में, समस्त दरबार में, सभी कैम्पों के दरवाजों पर और विशेष रूप से सभी राजाओं के द्वार पर लगवा दिया गया था। जन-साधारण में भी इसका व्यापक प्रचार किया गया था। इस प्रचार का अपेक्षित प्रभाव भी हुआ और बड़ी संख्या में लोग महर्षि के पास सत्संग हेतु आने लगे।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन- महर्षि दयानन्द को दिल्ली दरबार में आने का निमन्त्रण सम्भवत: उनके विशेष स्नेहपात्र इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव होल्कर ने दिया था। महर्षि उपस्थित राजाओं के समक्ष देशोद्धार, वैदिक धर्म और स्वातन्त्र्य के साथ सामाजिक जागरण के सन्दर्भ में विचार रखना चाहते थे। महाराज चंबा और महाराज होल्कर ने इस उद्देश्य में कृतकार्यता हेतु प्रयत्न भी किये, परन्तु इसमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली। वस्तुत: तत्कालीन नृपगण में राष्ट्रहित और प्राचीन गौरव गाथा के श्रवण के प्रति लालसा कथामात्र अवशेष रह गई थी। नाना प्रकार के व्यसनों और पाखण्डों में संलिप्त राजागण यदि उच्च विचारों के श्रवण के प्रति अनुत्सुक थे, तो आश्चर्य ही क्या? महर्षि से इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण भेंट न होने देने में राजाओं के स्वार्थ में आकण्ठ डूबे पण्डितों का भी विशेष योगदान था। स्वार्थी पण्डित और चाटुकार राजाश्रयी जन नहीं चाहते थे कि राजा महर्षि की धर्मचर्चा में सम्मिलित हों। उन्हें डर था कि ऐसा होने पर वे सत्य को ग्रहण करने के लिए उद्यत हो जायेंगे और उनका तथाकथित वर्चस्व पराभूत हो जायेगा।

काश्मीर-नरेश महाराज रणवीर सिंह महर्षि दयानन्द से भेंट के लिए उत्सुक थे। उन्होंने अपने मन्त्री बाबू नीलाम्बर और दीवान अनन्तराय को महर्षि से इस भेंट के लिए समय और स्थान निश्चित करने का निवेदन किया। महर्षि द्वारा सब कुछ निश्चित कर दिये जाने पर भी राजपण्डित गणेश शास्त्री एवं अन्यों ने इस पवित्र कार्य को क्रियान्वित नहीं होने दिया। यह उल्लेखनीय है कि परवर्ती काल में पं. गणेश शास्त्री आर्य सिद्धान्तों के प्रबल समर्थक बन गए थे। यहाँ यह सम्भावना भी निराधार नहीं है कि महर्षि के राष्ट्रीय चेतना और भारत स्वातन्त्र्य से संदर्भित क्रान्तिकारी विचारों से राजाओं को सम्बोधित करने की जानकारी अंग्रेज शासकों को मिल गई हो और इस समस्त प्रकल्प को रोकने हेतु उन्होंने अपने परोक्ष प्रभाव का प्रयोग कर इस प्रकार की किसी गतिविधि की सम्भावना को ही निर्मूल करने का उद्योग किया हो। कारण कुछ भी हो, महर्षि को अपने इस

विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। परन्तु **महर्षि दयानन्द का यह प्रयत्न इतिहास के पन्नों में पराधीन भारत में राष्ट्रीय ऐक्य और वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद करने वाले प्रथम कदम के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।**

धार्मिक एकता सम्मेलन- महर्षि दयानन्द ने अपने इस दिल्ली प्रवास के दौरान भारत के भिन्न-भिन्न मतों के नेताओं और सुप्रसिद्ध समाजसुधारकों के एक सम्मेलन का भी आयोजन किया। इस सभा में पंजाब के सुप्रसिद्ध सुधारक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी, ब्रह्मसमाज के विख्यात नेता बाबू केशवचन्द्र सेन, नवीनचन्द्र राय, भारत में मुस्लिम जागरण के अग्रदूत सैयद अहमद खाँ, मुंशी इन्द्रमणि, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। यह भेंटवार्ता और सम्मेलन कई दिन तक चलता रहा। इस सम्मेलन के संयोजक और प्रमुख वक्ता के रूप में महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष और उसके निवासियों की धर्म विषयक दुर्दशा का वर्णन किया। महर्षि ने उपस्थित सुधारकों से जोर देकर आग्रह किया कि आप सभी अपनी-अपनी रीति और नीति से राष्ट्रोत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं तथापि वैचारिक भिन्नता एवं पारस्परिक एकता के अभाव में अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि नहीं हो रही है। महर्षि ने सबको सुझाव दिया कि यदि भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के नेता वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानकर उसके दृष्टिकोण से धर्मप्रचार करें तथा वैदिक संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों के माध्यम से देश और समाज की उन्नति का उपाय करें तो सफलता निश्चित है। महर्षि ने कहा कि हम सब एकमत होकर एक ही रीति से देश के सुधार के कार्य में तत्पर हों तो देश शीघ्र सुधर सकता है। पर्याप्त रूप से परस्पर सहयोग और प्रीति के भाव रखते हुए भी ये सभी महर्षि दयानन्द के साथ व्यापक सहमति नहीं बना पाये। इनमें से मुंशी इन्द्रमणि, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि और मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी तो महर्षि से सहमत थे, परन्तु बाबू केशवचन्द्र सेन और बाबू नवीनचन्द्र राय ब्रह्मसमाज के स्थापित सिद्धान्तों के कारण और सैयद अहमद खाँ इस्लाम की चिन्तन परम्परा के प्रति प्रतिबद्धता के कारण वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करने के महर्षि के आग्रह से सहमत नहीं हुए। इस सम्मेलन का वृत्तान्त कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'इण्डियन मिरर' (खण्ड १६, संख्या ११, १४ जनवरी १८७७) एवं लाहौर से प्रकाशित होने वाले 'बिरादरे हिन्द' (जनवरी १८७७) में प्रकाशित हुआ। यह सम्मेलन इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था कि इसमें पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश), पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र के प्रतिनिधि, धार्मिक नेता एवं कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए। सम्पूर्ण भारत में धार्मिक एकता स्थापति करने की दृष्टि से अपने ढंग का यह पहला अभूतपूर्व सम्मेलन था।

दिल्ली दरबार में महर्षि दयानन्द के निर्देशन में समायोजित राष्ट्रीय एकता सम्मेलन और धार्मिक एकता सम्मेलन को भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय स्थान दिया जाना चाहिए, जो कि अब तक नहीं दिया गया है।

महर्षि दयानन्द का यह दिल्ली प्रवास एक मास (१७ दिसम्बर १८७६-१६ जनवरी १८७७) भर का रहा।

सन्दभ

१. नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती, डॉ. भवानीलाल भारतीय

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन चरित, श्री देवेन्द्रनाथ बाबू मुखोपाध्याय

३. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, पं. लेखराम

४. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, स्वामी सत्यानन्द

५. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार, डॉ. वेदपाल (सम्पादक)

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१७

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत २८ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	१२ नवम्बर, १९८८
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	०५ नवम्बर, १९८९
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	२७ नवम्बर, १९९०
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	१६ नवम्बर, १९९१
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	०१ नवम्बर, १९९२
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	२८ नवम्बर, १९९३
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	१२ नवम्बर, १९९४
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	०३ नवम्बर, १९९५
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	०१ नवम्बर, १९९६
१०. वेद और राष्ट्र।	२४ अक्टूबर, १९९७
११. वेद और विज्ञान।	०९ अक्टूबर, १९९८
१२. वेद और ज्योतिष।	१० नवम्बर, १९९९
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	०३ नवम्बर, २०००
१४. वेद और निरुक्त	१८ नवम्बर २००१
१५. वेद में इतिहास नहीं	०१ नवम्बर २००२
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	३१ अक्टूबर २००३
१७. वेद में शिल्प	१९ नवम्बर २००४
१८. वेदों में अध्यात्म	११ नवम्बर, २००५
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	२७ नवम्बर, २००६
२०. ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है''	१६ नवम्बर, २००७
२१. वैदिक समाज विज्ञान	०५ नवम्बर, २००८
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	२३ अक्टूबर, २००९
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	१२ नवम्बर, २०१०
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	०४ नवम्बर, २०११
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्य: वैदिक परिप्रेक्ष्य	१६ नवम्बर, २०१२
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	८ नवम्बर, २०१३
२७.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४
२८.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	२०,२१,२२ नव., २०१५
२९.दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	४,५,६ नव., २०१६
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	२७,२८,२९ अक्टू., २०१७

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१७ के लिए निर्धारित विषय

वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त

उपशीर्षक :

1. ऋग्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
2. ऋग्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
3. ऋग्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
4. ऋग्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. ऋग्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
6. ऋग्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
7. यजुर्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
8. यजुर्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
9. यजुर्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
10. यजुर्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
11. यजुर्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
12. यजुर्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
13. सामवेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
14. सामवेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
15. सामवेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
16. सामवेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
17. सामवेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
18. सामवेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
19. अथर्ववेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
20. अथर्ववेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
21. अथर्ववेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
22. अथर्ववेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
23. अथर्ववेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
24. अथर्ववेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
25. वेदांग में प्रमुख शिक्षा के सिद्धान्त
26. वैदिक काल में शिक्षा दर्शन
27. उपनिषदों में शिक्षण की विभिन्न शैलियाँ
28. उपनिषदों में आचार्य और शिष्य सम्बन्धों की विवेचना
29. उपनिषदों में अध्ययन का पाठ्यक्रम
30. उपनिषदों के संदर्भ में गुरुकुलों की विवेचना
31. उपनिषदों में शिक्षा का परम उद्देश्य
32. उपनिषदों में शिक्षण-विधि की विवेचना
33. प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन
34. प्राचीन भारत में शिक्षण-विधि और प्रकार
35. प्राचीन भारत में शिक्षा के विभिन्न उपागमों का अध्ययन
36. वैदिक साहित्य में आचार्य की भूमिका
37. मनुस्मृति में शिक्षा के सिद्धान्त
38. षड्दर्शनों में शिक्षण के सिद्धान्त
39. षड्दर्शनों में आचार्य-शिष्य सम्बन्धों का आलोचनात्मक विवेचन
40. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षा के सिद्धान्त
41. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षण की प्रमुख विधि
42. सांख्य-योग में शिक्षा दर्शन
43. वैदिक शिक्षा दर्शन में शिक्षण संस्थानों का प्रशासन-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में
44. वैदिक शिक्षा दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा-शास्त्री विशेषत: महर्षि दयानन्द सरस्वती के संदर्भ में
45. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
46. वैदिक शिक्षण-विधियाँ उनकी क्रियात्पक पक्ष के संदर्भ में
47. वैदिक शिक्षा सिद्धान्त और आधुनिक भारतीय शिक्षा-शास्त्री
48. प्राचीन भारत में शिक्षा-दर्शन, उसकी प्रक्रिया एवं साधन
49. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त मानव के परम लक्ष्य के संदर्भ में
50. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त-बाल शिक्षा के संदर्भ में
51. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त : महिला शिक्षण के संदर्भ में

52. वैदिक शिक्षा चिन्तन और महिला शिक्षण की प्रक्रियाएँ
53. वैदिक शिक्षा एवं प्राचीन शिक्षा-शास्त्री
54. वैदिक महिला शिक्षा-शास्त्री और उनके सिद्धान्त
55. वैदिक शिक्षण की पद्धतियाँ और आधुनिक शिक्षण की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन
56. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त और समकालीन भारतीय शिक्षा-शास्त्री : एक तुलनात्मक विवेचन
57. वैदिक शिक्षा में मनोविज्ञान की विवेचना
58. वैदिक शिक्षा में अधिगम प्रक्रिया और सिद्धान्त
59. वैदिक शिक्षा में अभिप्रेरण के प्रमुख सिद्धान्त
60. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व एवं उसके मापन की विधियाँ
61. वैदिक शिक्षा में बुद्धि विवेचन एवं बुद्धि विकास के विभिन्न प्रकार
62. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और व्यवहार के संदर्भ में
63. वैदिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा
64. वैदिक शिक्षा में वातावरण का महत्व
65. वैदिक शिक्षा में सृजनात्मकता के सिद्धान्त
66. वैदिक शिक्षा का परम लक्ष्य
67. महर्षि दयानन्द और वैदिक शिक्षा
68. वैदिक शिक्षा में अभिरुचि और मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त
69. वैदिक शिक्षा और भाषा अध्ययन
70. वैदिक शिक्षा और विज्ञान शिक्षण की विधियाँ
71. वैदिक शिक्षा और स्वास्थ्य चिन्तन
72. वैदिक शिक्षा में योग की भूमिका
73. वैदिक शिक्षा में आचार्य चिन्तन की भूमिका
74. स्मृतियों में शैक्षिक विचार - एक अध्ययन
75. वैदिक शिक्षा : वर्तमान अपेक्षायें और चुनौतियाँ
76. वैदिक शिक्षा : नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में
77. वैदिक शिक्षा में मूल्यों की उपादेयता - एक समीक्षा
78. वैदिक शिक्षा : शिक्षक और शैक्षणिक तंत्र
79. 21वीं सदी में वैदिक शिक्षा - एक मूल्यांकन
80. विकास की दहलीज पर वैदिक शिक्षा की भूमिका
81. राजधर्म के परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा
82. वैदिक शिक्षा : कृषि के संदर्भ में
83. वैदिक शिक्षा - शहरीकरण के संदर्भ में
84. वैदिक शिक्षा में एकाग्रता बोध
85. वैदिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा
86. वैदिक शिक्षा में अभिभावक की भूमिका
87. वैदिक शिक्षा तथा विद्यालय (गुरुकुल) प्रशासन
88. वैदिक शिक्षा में दीक्षान्त परम्परा के तत्व
89. वेदो में शैक्षिक निहितार्थ की प्रासंगिता
90. वैदिक शिक्षा का मूल्य तत्व - संस्कार शिक्षा - एक मौलिक चिन्तन
91. ब्राह्मण ग्रन्थों में शिक्षा के सिद्धान्त
92. वैदिक शिक्षा और समय की चुनौतियाँ
93. वैदिक शिक्षा और अनुसंधान - एक समीक्षा
94. वैदिक शिक्षा-सिद्धान्त बाल शिक्षा के लिए व्यापक उपागम - एक अध्ययन
95. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त - व्यवसायीकरण शिक्षा के संदर्भ में
96. वेदों में शिक्षा-सिद्धान्त - सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में
97. वैदिक शिक्षा और अध्ययन के विभिन्न विषय
98. वैदिक शिक्षा और गणित शिक्षण
99. वैदिक शिक्षा और कला के सिद्धान्त
100. वैदिक शिक्षा में कला शिक्षण
101. वैदिक शिक्षा और राज्य की भूमिका
102. वैदिक शिक्षा-शासन के संदर्भ में
103. वैदिक शिक्षा और मानव निर्माण
104. वैदिक शिक्षा में शिक्षक के कर्त्तव्य और दायित्वों की विवेचना
105. वैदिक शिक्षा - बुनियादी शिक्षा के ढाँचे के संदर्भ में
106. वैदिक शिक्षा में जीवन मूल्य
107. वैदिक शिक्षा - भाषा, समाज और संस्कृति के संदर्भ में
108. वैदिक शिक्षा में लिंग समानता
109. वैदिक शिक्षा में नैतिकता
110. वैदिक शिक्षा में मानव मूल्य
111. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और समान शैक्षिक अवसर
112. वेदों में शिक्षा में गुणवत्ता और विषय-वस्तु
113. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त और पाठ्यक्रम की गतिपरकता
114. वैदिक शिक्षा में पर्यावरण-उपागम - एक विवेचन
115. वेदों में शिक्षक-शिक्षा के मूल तत्त्व
116. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त - इक्कीसवीं शताब्दी के लिए

श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज

पं. ब्रह्मदत्त सोढा

आर्य्यजगत् में राजस्थान व मालवा का एक विशेष स्थान है। महर्षि दयानन्द ने अपने प्रचार-काल का विशेष भाग इस प्रान्त में बिताया, भारतीय नरेशों को जागृत करने में पर्याप्त समय दिया और अन्त में राजस्थान के केन्द्र अजमेर नगर में अपनी इहलोक लीला संवरण की।

आर्यसमाज की सेवा का बीड़ा उठाकर, उसे मरणपर्यन्त एक निष्ठा से निभाने वाले, सुप्रसिद्ध राजस्थानी, आजन्म ब्रह्मचारी, प्रकाण्ड-पण्डित, शास्त्रार्थ महारथी, व्याख्यानवाचस्पति, वेदशब्द सूची-निर्माता, पुरुषार्थप्रकाश-प्रणेता, राजोपदेशक महात्मा स्वामी श्री नित्यानन्द जी महाराज के संक्षिप्त परिचय के रूप में यह लेख आज से प्राय: ८० वर्ष पूर्व लिखा गया था। 'आर्यमार्त्तण्ड' में क्रमश: प्रकाशित यह लेख अधूरा प्राप्त हुआ है, अत: इसका अन्तिम अनुच्छेद प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी द्वारा लिखा गया है ताकि स्वामी जी के अन्तिम समय के जीवन को भी जान सकें। १८ सितम्बर को स्वामी जी की जयन्ती है, इस अवसर पर परोपकारी के पाठकों के समक्ष यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है, ताकि आर्यजगत् अपने तपस्वी विद्वान् पूर्वजों के जीवन से प्रेरणा ले सके। -**सम्पादक**

महात्मा श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज का जन्म श्रीमाली ब्राह्मण-परिवार में मारवाड़ के अन्तर्गत जालोर नामक ग्राम में भाद्रपद शुक्ला १४ सं. १९१७ को हुआ था। स्वामी जी का बाल्यकाल अधिकतर ननसाल में बीता और आपने अपने नानाजी से सन्ध्यावन्दन, रुद्री, पुरुष-सूक्त आदि का अभ्यास किया। आपके नानाजी कुछ-कुछ योग-साधना करते थे, कुछ तो इस सम्पर्क से और कुछ सुन्दरदासजी के सवैयों के कारण आपमें वैराग्यवृत्ति जाग्रत हुई और घर पर अध्ययन का संतोषजनक प्रबन्ध न पा आप विद्याभ्यास के निमित्त घर छोड़कर चल दिये।

२०-२२ वर्ष की अवस्था तक आप गुजरात, बंबई, पूना, सतारा, नासिक तथा काशी आदि में विद्याभ्यास करते रहे। काशी में स्वामी जी महाराज का परिचय ब्रह्मचारी गोपालगिरि जी से हुआ। ब्रह्मचारी जी महर्षि दयानन्द से परिचित थे और स्वामी नित्यानन्द जी को भी ब्रह्मचारी जी ने आर्यसमाज की ओर आकर्षित किया।

संवत् १९३९ के लगभग स्वामीजी बरेली पहुँचे और सुप्रसिद्ध आर्यसामाजिक पंडित यज्ञदत्तजी से वेदान्त के ग्रन्थों का पठन किया, इसी अवसर में स्वामीजी ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि भी पढ़े। स्वामी जी इस समय तक अपने को आर्यसमाजी नहीं कहते थे, यदा-कदा रामायण आदि ही की कथा करते थे, आपकी उदारता व भाषण-शैली इतनी आकर्षक थी कि तिलहर निवासी प्रसिद्ध आर्य श्रीयुत् चिम्मनलाल जी वैश्य ने १५०/- लगाकर स्वामीजी महाराज द्वारा बृहद् हवन करवाया और गीता की कथा करवाई। संवत् १९४१ में स्वामी जी जीव-ब्रह्म सम्बन्धी सिद्धान्त को छोड़कर आर्यसमाज के अन्य सब सिद्धान्त मानने लग गये थे और आप आर्यसमाजों में प्रचार कार्य करने लगे थे।

आर्यसमाज का वह शास्त्रार्थ युग था, स्वामी जी ने सर्वप्रथम शास्त्रार्थ आर्यसमाज पचरांव की ओर से किया।

स्वामी जी महाराज की ख्याति इतनी शीघ्रता से फैली कि संवत् १९४२ में जब मेरठ में संयुक्त प्रान्त की आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई, उस अवसर पर मेरठ आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर उपदेश देने के लिये स्वामी जी महाराज को निमन्त्रित करने के लिये मेरठ आर्यसमाज के एक प्रतिष्ठित सभासद देहली गये थे। स्वामी जी मेरठ पधारे और वहाँ आपके व्याख्यान उत्सव के उपरान्त भी १५-२० दिन हुए।

आजन्म साथी श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी से मिलाप-संयुक्त प्रान्त में भ्रमण करते समय एक बार श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज देहली जाने के लिये गाजियाबाद स्टेशन पर टहल रहे थे। गाड़ी आने पर आप उस डब्बे में जा बैठे, जिसमें एक अन्य संन्यासी महात्मा विराजमान थे। यह महात्मा स्वामी श्री विश्वेश्वरानन्दजी महाराज थे। स्वामी-युगल का पारस्परिक परिचय हुआ

और वह इतना घनिष्ठ हुआ कि तब से दोनों महात्मा साथ ही रहने लगे और आजन्म साथ रहे। क्या प्रचार, क्या ग्रन्थ-रचना, सभी कार्यों में दोनों महात्माओं का सहयोग रहा।

इन्दौर और देवास में आर्यसमाज की स्थापना-१९४२ वि. में स्वामीजी संयुक्त प्रान्त के नगरों में ही प्रचार करते रहे। इसी बीच में सिसैंडी के राजासाहब श्रीमान् चन्द्रशेखरजी के विशेष आग्रह से लगभग डेढ़ मास बिठूर में ठहरे। संवत् १९४३ की रामनवमी पर स्वामीजी ने अयोध्या में प्रचार किया और फिर घूमते-फिरते ग्वालियर, दतिया, करौली, धौलपुर आदि में प्रचार करते हुए जयपुर पहुँचे। वहाँ प्रचार कर संवत् १९४४ में अजमेर पधारे और दूधिये पर ठहरे। अजमेर से जब स्वामीजी नसीराबाद जा रहे थे, तब रेल में अजमेर के प्रधान मुंशी पद्मचन्दजी से मिले और उनके आग्रह से उनकी नसीराबाद वाली बगीची में ठहरे। नसीराबाद से स्वामी जी हाड़ोती व मालवा में प्रचारार्थ निकल गये। केकड़ी, कोटा, झालावाड़, खिलचीपुर, राजगढ़ आदि स्थानों में प्रचार करते हुए इन्दौर पहुँचे।

सेठ जयनारायणजी दाणी व डॉक्टर गोविन्दराव चावस्कर के प्रबन्ध से स्वामीजी के पांच व्याख्यान कृष्णपुरा में दक्षिणी पंडितों के राम मन्दिर में हुए। इन व्याख्यानों से प्रभावित होकर जनता ने इन्दौर में आर्यसमाज की स्थापना की और इन्दौर के दीवान आर. रघुनाथराव साहब ने स्वामी जी के व्याख्यान सरकारी लाइब्रेरी में करवाये। इन्दौर से स्वामी जी देवास गये और वहाँ भी आर्यसमाज स्थापित किया।

येवला में शास्त्रार्थ और जस्टिस रानाडे से परिचय-देवास से स्वामीजी येवला आर्यसमाज के उत्सव में गये। वहाँ आपका परिचय प्रसिद्ध देशभक्त, समाज-सुधारक, न्याय-निपुण जस्टिस माधव गोविन्द रानाडे से हुआ और यह परिचय उत्तरोत्तर घनिष्ठ होता गया।

येवला में स्वामीजी के व्याख्यानों के अतिरिक्त पौराणिकों से शास्त्रार्थ भी हुआ। येवला से लौटकर स्वामीजी इन्दौर आये और मऊ में जाकर आर्यसमाज की स्थापना की और वहाँ से खंडवा, हरदा, होशंगाबाद आदि स्थानों तथा भोपाल बीना रेलवे का मार्ग निर्माण करने वाले ठेकेदारों के आग्रह पर स्थान-स्थान में ठहरकर प्रचार करते हुए नरसिंहगढ़ पधारे और नगर के बाहर महादेव के मन्दिर में ठहरे।

महाराजा नरसिंहगढ़ को उपदेश, वल्लभ सम्प्रदाइयों से शास्त्रार्थ और ५०० क्षत्रियों का यज्ञोपवीत-दो ही तीन दिनों के उपदेश के अनन्तर स्वामीजी महाराज के व्याख्यानों का यह प्रभाव पड़ा कि राजपण्डितों ने स्वामी जी से संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया और नरसिंहगढ़ाधीश महाराजा प्रताप सिंह जी स्वयं स्वामी जी से मिलने पधारे, एक घण्टे से अधिक वार्तालाप कर स्वामी जी से गढ़ में ठहरने की प्रार्थना की और अत्यन्त आदर से हाथी की सवारी पर किले में ले गये। स्वामी जी नरसिंहगढ़ में चार मास तक ठहरे और इस बीच में वल्लभ सम्प्रदाइयों से बड़ा भारी शास्त्रार्थ हुआ, जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रावणी-पूर्णिमा पर महाराज नरसिंहगढ़ ने अपने ५०० से अधिक प्रजाजनों सहित, जिनमें जागीरदार विशेष थे, कंठियों के स्थान में पाताल-पानी में आकर तीन दिन व्रत रखा। बृहद् यज्ञ के उपरान्त यज्ञोपवीत धारण किये और वैदिक धर्म की सत्यता में अपनी श्रद्धा प्रकट की।

होशंगाबाद और नीमच में आर्यसमाज की स्थापना-नरसिंहगढ़ से स्वामी जी भोपाल होते हुए होशंगाबाद आये और विपक्षियों के घोर विरोध करते रहने पर भी आर्यसमाज की स्थापना की। पुनः हरदा आये और यहाँ भी आर्यसमाज स्थापित किया। हरदा में स्वामीजी खंडवा, इन्दौर, उज्जैन आदि स्थानों में भ्रमण करते हुए नीमच पहुँचे और वहाँ भी आर्यसमाज स्थापित किया।

नीमच से चलकर चित्तौड़ में ठाकुर साहब श्री जगन्नाथसिंह जी के और भीलवाड़ा में डॉक्टर लक्ष्मणदास जी (जिन्होंने महर्षि दयानन्द की रुग्णावस्था में आबू में सेवा की थी) के प्रबन्ध से प्रचार किया और बनेड़ा होते हुए दिसम्बर १८८८ में शाहपुरा पहुँचे।

राजाधिराज शाहपुरा प्रभावित हुए-पण्डित हमीरमल जी शर्मा ने राजाधिराज शाहपुरा को स्वामीजी के पधारने की सूचना दी। स्वामीजी ने सर्वप्रथम ईश्वर के अस्तित्व पर व्याख्यान दिया। राजाधिराज पर स्वामी जी के व्याख्यान का विशेष प्रभाव पड़ा और श्रीमानों ने पण्डित हमीरमल जी को (जो राजाधिराज के प्रतिनिधि बनकर परोपकारिणी सभा के अधिवेशन में अजमेर जाने वाले थे) आज्ञा दी कि स्वामीजी महाराज को अजमेर ले जाओ और परोपकारिणी

सभा के सभासदों से परिचय कराओ। स्वामीजी महाराज अजमेर पधारे और यहीं पर ही आपने आर्यसमाज का काम पूरी शक्ति से करने का व्रत लिया।

मसूदा में बृहद् यज्ञ और कथा-अजमेर से स्वामीजी मसूदा रावसाहब के निमन्त्रण पर मसूदा गये और वहाँ बृहद् यज्ञ के उपरान्त मनुस्मृति की कथा की और पुनः शाहपुरा गये और वहाँ प्रचार की व्यवस्था में परामर्श दे अजमेर, भिनाय, केकड़ी, सावर व जहाजपुर होते हुए बूंदी पहुँचे।

बून्दी शास्त्रार्थ-बूंदी अब भी बहुत पिछड़ा हुआ राज्य है, अतः उस समय की कल्पना सहज ही की जा सकती है। स्वामीजी के पधारने पर बूंदी में खलबली मच गई, बड़ा भारी शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज के साहित्य में यह शास्त्रार्थ विशेष स्थान रखता है। राज्याश्रित पौराणिक पंडित जब और किसी प्रकार से शास्त्रार्थ में पार न पा सके तो उन्होंने बूंदी के महाराज रामसिंह जी द्वारा स्वामीजी को बूंदी छोड़कर चले जाने की आज्ञा निकलवाई, परन्तु ऐसी कृत्यों से सत्य कब छिप सकता था, आर्यसमाज शाहपुरा ने उक्त शास्त्रार्थ छपवाकर प्रकाशित करा दिया। पंडित गुरुदत्तजी विद्यार्थी एम.ए. के शब्दों में कहा जावे तो ऐसा महत्त्वपूर्ण कोई शास्त्रार्थ महर्षि की मृत्यु के पश्चात् आर्यसमाज ने नहीं किया था।

भारत-धर्म-महामण्डल की स्थापना के समय ब्रजभूमि में वेदप्रचार और मनस्वी मालवीयजी से परिचय- बूंदी से स्वामीजी महाराज शाहपुरा आ गये और वहाँ से मथुरा आर्यसमाज के विशेष निमन्त्रण पर मथुरा, वृन्दावन पहुंचे। वृन्दावन में इस अवसर पर भारत-धर्म-महामण्डल का संगठन होने को था, अतः आर्यसमाज का प्रचार धूमधाम से किया गया। यहीं पर स्वामी जी का माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय जी से सर्वप्रथम परिचय हुआ।

मसूदा में आर्यसमाज-वृन्दावन से स्वामीजी जयपुर लौट आये और यहाँ से अजमेर होते हुए मसूदा पहुँचकर श्रीमान् रावसाहब बहादुरसिंह जी वर्मा मसूदाधीश के प्रधानत्व और कोठारी सुजाणसिंह जी के मन्त्रित्व में आर्यसमाज की स्थापना की।

महाराज शिवाजीराव होल्कर से भेंट-मसूदा से स्वामीजी नीमच, उज्जैन आदि में प्रचार करते हुए इन्दौर पहुँचे। इस अवसर पर डॉक्टर गोविन्दराव चावस्करजी ने महाराजा शिवाजीराव होल्कर से स्वामी जी की भेंट कराई, महाराजा स्वामीजी की विद्वत्ता से अत्यन्त प्रभावित हुए और कहा कि ''वर्तमान साधु समुदाय की चरित्र-भ्रष्टता तो प्रसिद्ध है और वे लोगों को बिगाड़ने में प्रवीण होते हैं। **हमने यह पहिले ही साधु देखे जो लोगों को सुधारते हैं।**''

महाराजा ने स्वामी जी से निवेदन किया कि आप केवल इन्दौर राज्य में ही उपदेश करें। राज्य की ओर से प्रत्येक स्थान पर आपके भोजन निवास आदि का प्रबन्ध रहेगा। इसके अतिरिक्त १०००/- मासिक आपकी भेंट किया जाया करेगा। स्वामी जी ने यह कहकर कि हम प्रचार करने को तो उद्यत हैं, परन्तु केवल इन्दौर राज्य में ही रहें, अन्यत्र न जावें, यह बन्धन स्वीकार करने को उद्यत नहीं हैं। महाराज ने इस पर जितना अधिक हो सके उतना इन्दौर राज्य में उपदेश देने का आग्रह किया और स्वामी जी के मना करते रहने पर भी मासिक भेंट का प्रबन्ध कर दिया।

इन्दौर राज्य में प्रचार करते हुए स्वामी जी खंडवा, होशंगाबाद, सिहोर और हरदा आदि स्थानों में गये और हरदा से महाराजा नरसिंहगढ़ का आमन्त्रण पाकर नरसिंहगढ़ पधारे और महाराजा को लगभग ४-५ महीने तक उपदेश किया।

महाराजा यशवन्तसिंह व कर्नल सर प्रतापसिंह जी से प्रथम परिचय-महाराज ने स्वामीजी को अपने विवाहोत्सव पर पधारने का निवेदन किया, तदनुसार स्वामीजी भोपाल, आगरा व अजमेर होते हुए जोधपुर पहुँचे और वहाँ महाराजा यशवन्तसिंह जी और कर्नल सर प्रताप सिंह जी से भेंट की। उन दिनों जोधपुर आर्यसमाज का कार्य व्याकरणाचार्य पंडित ठाकुरप्रसाद जी के हाथों में था।

लौटते हुए स्वामीजी महाराज साहब नरसिंहगढ़ के साथ-साथ अजमेर आये। इस समय दी.ब. हरबिलास जी सारडा अजमेर आर्यसमाज के प्रधान थे। महाराजा साहब का स्वागत-सत्कार बहुत धूमधाम से किया गया और महाराजा साहब ने केसरगंज स्थित आर्यसमाज भवन निर्माण

में १०००/- की सहायता दी और अजमेर आर्यसमाज का संरक्षक सभापति बनना स्वीकार किया।

स्वामी जी अजमेर ही ठहरना चाहते थे, परन्तु महाराजा साहब अत्यन्त आग्रह करके आपको पुन: नरसिंहगढ़ ले गये। स्वामी जी के इस नरसिंहगढ़ प्रवास का परिणाम यह हुआ कि सर्वसाधारण में आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा बढ़ी, अनेकों क्षत्रियों ने यज्ञोपवीत लिये।

नरसिंहगढ़ से लौटते हुए मार्ग के स्थानों में प्रचार करते हुए स्वामी जी देवास पहुँचे और वहाँ दीवान श्री नीलकण्ठ जनार्दन कीर्तन के प्रबन्ध में व्याख्यानों का प्रबन्ध हुआ।

दक्षिण भारत में-आप मद्रास में सोशल कांफ्रेंस में पहुँचे। समझा यह जाता था कि वहाँ अंग्रेजी बोलने वाला उत्तर भारतीय विद्वान् ही सफल हो सकता है। प्रेस में राजस्थान में जन्में स्वामी नित्यानन्द जी को देश का उस समय का सब से बड़ा विद्वान् बताया गया। आपने आन्ध्र और मैसूर में भी प्रभावशाली व्याख्यान दिये। मैसूर के महाराजा पर आपकी अमिट छाप पड़ी।

बंगाल में गये तो वहाँ भी धूम मचा दी। दिन-रात धर्म प्रचार व देश सुधार में एक-एक क्षण दिया।

उज्जैन में आप पर आक्रमण- हैदराबाद में बन्दी बनाये गये तो आप न दबे और न डरे। एक बार उज्जैन में आपके व्याख्यानों के व्यापक व गहरे प्रभाव से चिढ़कर कुछ मन्दभागी विरोध पर उतर आये। आपको घेर लिया गया। ईंट पत्थर की वर्षा होने लगी। महर्षि दयानन्द के इस निर्भीक शिष्य ने अपने अटल ईश्वर विश्वास का परिचय देकर अपनी छाप छोड़ी। पुलिस ने पहुँचकर आपको अपने सुरक्षा घेरे में ले लिया।

८ जनवरी १९१४ को आपने मुम्बई में प्राण त्याग दिये। आप एक सच्चे वीतराग संन्यासी थे। किसी राजा महाराजा के मोह बन्धन में न बँधे। न धन सम्पदा एकत्र की, न बैंक खाता था और न कोई मठ या डेरा था। उस युग में साधुओं के लाखों करोड़ों रुपये के ट्रस्ट भी नहीं थे। एक-एक श्वास देश, धर्म, जाति के लिये देकर अमर पद को प्राप्त कर गये। निष्कलङ्क निर्मल जीवन के नित्यानन्द स्वामी की जय हो-जय हो-जय हो।

एक आहुति
अपने आचार्य के लिए........

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गौशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की नि:शुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल-*** आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा-*** अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला-*** गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम-*** वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय-*** इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला-*** योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय-है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ अगस्त २०१७ तक)

१. श्री जयदेव अवस्थी, जोधपुर २. श्रीमती रन्जना आर्या, बैंगलोर ३. ज्योति देव, रूद्रपुर ४. श्रीमती सत्यवती देवी, रूद्रपुर ५. श्री विपिन कुमार, दिल्ली ६. सुमित्रा व प्रतीका अरोड़ा, फरीदाबाद ७. श्रीमती कमला पाण्डव, पटियाला।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ अगस्त २०१७ तक)

१. श्री नाथूलाल त्रिवेदी, भीलवाड़ा २. रामप्यारी देवी त्रिवेदी, भीलवाड़ा ३. आर्य समाज, भीलवाड़ा ४. श्री नाथूलाल माली, भीलवाड़ा ५. विभाजी शिवरतन जोशी, भीलवाड़ा ६. श्री माणिक चन्द जैन, नागौर ७. श्रीमती कमला पाण्डव, पटियाला ८. श्री मलखान सिंह परमार, झाँसी ९. श्री कपिल गुप्ता, झाँसी १०. श्री महेन्द्र पाठक, झाँसी ११. श्री विकास नारायण, सोलान १२. श्रीमती प्रभा देवी, झाँसी १३. सुश्री हिमांशा भार्गव, अजमेर १४. श्रीमती उमा भार्गव, अजमेर १५. श्री कृष्णाराम आर्य, मकराना, नागौर १६. पुष्पा देवी आर्या, मकराना १७. श्री चन्द्रभान आर्य, सहारनपुर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

भाषाई और सांस्कृतिक संकट की विषम स्थितियाँ

अखिलेश आर्येन्दु

दक्षिणपन्थ हो या वामपन्थ दोनों यह मानते रहे हैं कि देश में भाषा का अनुत्तरित सवाल पिछले ७० सालों से उत्तर की प्रतीक्षा में अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है। इसी तरह भाषाई संकट से उपजा सांस्कृतिक संकट भी निरन्तर गहराता जा रहा है। भारतीय समाज का पढ़ा-लिखा तबका अब भाषा व संस्कृति से ज्यादा तरजीह भावना पर देने लगा है। बड़े शहरों में, चाहे वह किसी भी प्रान्त का हो, अंग्रेजी या हिंग्लिश में बात करने में खुद को गौरवान्वित समझता है। इसी तरह विदेशी अपसांस्कृतिक तत्त्वों को भी अपनाने में उसे गुरेज नहीं। उसे लगता है, अब जबकि दुनिया ग्लोबल बन गई है, ऐसे में भाषा और संस्कृति कहीं की भी हो, कैसी भी हो, बोलने और अपनाने में कोई दिक्कत नहीं आनी चाहिए। हाँ, आपकी भावना क्या है, वह बोलते वक्त प्रकट होनी चाहिए। यानी हिन्दी के नाम पर हिंग्रेजी या हिंग्लिश बोलिए या अंग्रेजी या आंचलिक बोली के साथ अंग्रेजी का मिश्रण, सब ठीक है। विदेशी संस्कृति के रंग-ढंग से रहना उसे कहीं ज्यादा 'मॉडर्न' बनाता है। यदि सरसरी नजर से देखा जाए तो बात कुछ ठीक भी लगती है। आम आदमी से लेकर खास आदमी-जिसमें शासक वर्ग, प्रशासक वर्ग, व्यापारी-उद्योगपति और विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर तक की भाषा-संस्कृति का मापदण्ड लगभग यही है। सहज, सरल हिन्दी या भारतीय भाषा बोलने की न तो लोगों की आदत है और न तो इसमें वह गौरव ही महसूस करता है। इसी तरह भारतीय संस्कृति के मामले में भी है।

दरअसल, विदेशीपन का आकर्षण भारतीयों में वर्षों से रहा है। आज अंग्रेजी आजादी के ७० साल बाद भी तेजी से आगे क्यों बढ़ रही है, जबकि भारतीय भाषाओं का दम अंग्रेजी के सिर पर सवार होने के कारण लगातार घुटता जा रहा है? संविधान में गुंथी १८ भाषाओं का मामला हो या उन आंचलिक बोली-भाषाओं का, जिनका जन्म और पालन-पोषण इसी धरती पर हुआ, सभी के जीने के अधिकार अंग्रेजी छीन रही है या कहें कि हम अंग्रेजी और अंग्रेजियत को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

केन्द्र ने हिन्दी को राजभाषा होने के कारण महत्त्व दिया। लेकिन अंग्रेजी न तो राजभाषा है, न राष्ट्रभाषा है, फिर इसके प्रति ऐसा व्यामोह किसलिए? मौजूदा एनडीए सरकार जिस स्वदेशी, संस्कृति, स्वाभिमान, सादगी और स्वावलम्बन की बात कर रही है, उसमें क्या भारतीय भाषाओं को उनके स्वाभिमान की रक्षा, उन्हें बढ़ावा देने की ईमानदार पहल नहीं आती? आज शहर ही नहीं गाँवों का पढ़ा-लिखा वर्ग अपनी मातृभाषा या हिन्दी बोलने के बजाय अंग्रेजी या हिंग्रेजी बोलने में अधिक गर्व महसूस करता है। उसे पिज्जा, मैकडोनल और कोक-पेप्सी अधिक आकर्षित करते हैं? वह ऐसा करके यह दिखाना चाहता है कि हम भी नए जमाने के साथ बहुत आगे निकल चुके हैं। हम कोई अनपढ़-गँवार आदमी नहीं कि जो अपनी माटी से ही खेलें और चिपके रहें।

बार-बार एक सवाल कभी हिन्दी को लेकर तो कभी आंचलिक बोलियों-भाषाओं को लेकर दुहराया जाता रहा है कि भाषा के सवालों का जवाब किससे मांगा जाए-शासक, प्रशासन या उनसे जो भाषा के सवाल को कोई सवाल ही नहीं मानते, लेकिन शासन में उनकी सीधी दखल है। तकरीबन हर हिन्दी दिवस या विश्व हिन्दी दिवस पर यह सवाल मौजूंद हो जाता है।

भाषा का सवाल केन्द्र के पाले में है। सर्वोच्च न्यायालय इसे हल नहीं कर सकता और न वह हल करना चाहता है। क्योंकि देश के तकरीबन सभी उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में सारा कामकाज और बहस अंग्रेजी में होती है और फैसला भी अंग्रेजी में लिखा जाता है। यानी न्यायालय का स्वभाव और आदत भी अंग्रेजीपरक है। ऐसे में न्यायपालिका से न्याय की गुहार लगाना बेईमानी ही होगी। इसी तरह संस्कृति से ताल्लुक रखने वाली बातों को लेकर बहस-मुबाहिसें चलती रही हैं। आज तक कोई

निर्णय नहीं हो पाया कि भारतीयों का पहनावा क्या है और भारतीयता की सांस्कृतिक पहचान क्या है?

अब जब कि केन्द्र में एनडीए की सरकार है, इसे अपने कर्त्तव्य और अधिकार की याद दिलाई जा सकती है और यह सवाल पूछा जा सकता है कि आखिर हिन्दी और भारतीय भाषाओं की उपेक्षा का सिलसिला चलता रहेगा या इसे खत्म किया जाएगा? जाहिर तौर पर कुछ मन्त्रालयों को छोड़कर अब भी सारा कामकाज विदेशी भाषा में ही किया जा रहा है। यहाँ तक कि सूचना प्रसारण मन्त्रालय का ज्यादातर कार्य विदेशी भाषा में होता देखा जा सकता है।

हम हर हिन्दी दिवस के मौके पर बड़े कारुणिक स्वर में हिन्दी की दुर्दशा का रोना रोते हैं और यह मानते हैं कि हिन्दी की इस दुर्दशा का कारण हिन्दी वाले ही हैं। फिर जब हिन्दी वाले ही हिन्दी के दीप की लौ को तेज नहीं होने देना चाहते, तो अंग्रेजी के साम्राज्य को बढ़ते जाने और उसके वर्चस्व को लेकर हो-हल्ला क्यों मचाते हैं? जब हम भारतीयों को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति लगाव और गर्व खत्म हो गया है तो विदेशी भाषा या गुलामी की भाषा की बढ़ती शक्ति के प्रति दुराग्रह क्यों? यानी न अपनी बढ़ाएंगे और न उसे बढ़ने देंगे?

कौन आज चाहता है कि मातृभाषा में उनकी संतान शिक्षा हासिल करे? कौन चाहता है कि सारा कार्य मातृभाषा में ही करके एक मिसाल पेश करे? मातृभाषा में भी कठिन से कठिन कार्य किया जा सकता है-इस सच को मानते हुए कि मातृभाषा से बच्चे के मस्तिष्क का विकास सन्तुलित तरीके से होता है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने से उनका दायां और बायां दोनों मस्तिष्क विकसित होते है। लेकिन यदि उनकी मातृभाषा में शिक्षा न हुई तो उनकी सीखने और याद करने की क्षमता पर जबर्दस्त प्रतिकूल असर पड़ता है। लाखों साल पहले भारतीय वैज्ञानिकों (ऋषि-मुनि) ने इस बात को अपने गहन अनुसन्धान के बल पर समझा दिया था कि बच्चों का स्वर्णिम भविष्य उनकी मातृभाषा में ही सुरक्षित है। वेदों में मातृभाषा का पुरजोर समर्थन किया गया है। उत्तम सन्तान के निर्माण के लिए मातृभाषा में शिक्षा दिये जाने की महती आवश्यकता बताते हुये महान् समाज सुधारक और दार्शनिक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- माता बच्चे की पहली पाठशाला होती है। इसलिए माँ की जो भाषा हो, सन्तान को उसी में शिक्षा दिलाने से वह हर तरह से उत्तम बनती है।

अब जब कि अंग्रेजी लोगों के घरों में सेन्धमारी कर चुकी है। जहाँ कभी मातृभाषाओं का एकछत्र राज्य था, वहाँ माता-पिता अपनी संतान से अंग्रेजी में बात करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि अंग्रेजी सीखना बच्चे के लिए अधिक फायदेमन्द है। ऐसे माता-पिताओं को कौन समझाए कि भाषा के साथ उसकी संस्कृति भी आती है। अंग्रेजी बोल-पढ़कर यह सोचो की भारतीय बने रहोगे, संभव नहीं। मैकाले की दूरदर्शी नजर आज ऐसे परिवारों में चरितार्थ दिख रही है कि भारत भले ही आजाद हो जाए लेकिन भारतीय अंग्रेजी के व्यामोह से छूट नहीं पाएंगे। वे रंग से भले भारतीय दिखें लेकिन विचारों से पूरी तरह काले अंग्रेज होंगे।

हम अंग्रेजी के साथ अपना कितना कुछ खो रहे हैं, इस सबसे जरूरी विषय पर कभी विचार नहीं किया गया। अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक व कॉन्वेन्ट स्कूलों-कॉलेजों में एक शब्द भी हिन्दी या दूसरी भारतीय भाषाओं के बोलने पर जुर्माना लगाने का एक चलन भारत में वर्षों से चलता आ रहा है। किससे पूछें कि ऐसे अंग्रेजीपरस्त स्कूलों के साथ क्यों सख्ती नहीं बरती जाती? ऐसा भारत में ही क्यों होता है? जो भारत की राजभाषा है, जिससे भारत की पहचान, मान और सम्मान है, उसे बोलने पर इतना बड़ा प्रतिबन्ध?

भारत की ज्यादातर भाषा-बोलियों की हालात दयनीय है। मैं पंजाबी, अवधी, भोजपुरी, मगधी, तमिल, तेलुगु, कश्मीरी, हिमाचली, छत्तीसगढ़ी या डोगरी हर भाषा-बोली पर एक आसन्न संकट मंडराता देख रहा हूँ। जब भी मैं गांव जाता हूँ तब यह देखकर हैरान रह जाता हूँ कि गरीब से गरीब घर के लड़के-लड़कियाँ अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहे हैं, भले ही वे पढ़ने में फिसड्डी हों, अंग्रेजी में हर बार फेल होते हों, लेकिन दूसरे बच्चों का अन्धानुकरण इतनी

तेजी के साथ बढ़ गया है कि बच्चे को उसकी जरूरत के बिना उसे अंग्रेजी पढ़ने के लिए उस पर दबाव बनाया जा रहा है। इस दबाव से बच्चा न तो अपनी मातृभाषा व स्थानीय भाषा सीख पा रहा है और न ही वह अंग्रेजी में ही दक्ष हो पा रहा है। बस एक होड़ लगी है, दिखावा किया जा रहा है। फलाँ का बच्चा भी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ता है यानि वह भी इस तथाकथित विकास की धारा का हिस्सा बन गया है। माँ-बाप बड़े गर्व से बताते हैं- मेरी बेटी या बेटा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ते हैं। पूछिए, क्यों अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा रहे हैं, तो तपाक से बोलेंगे-अंग्रेजी का जमाना है। सारे गांव के बच्चे जब अंग्रेजी में पढ़ रहे हैं तो मेरा बच्चा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने से क्यों चूक जाए।

उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली अवधी, भोजपुरी, कौरवी और बुन्देलखंडी की हालत अत्यन्त नाजुक है। जिस अवधी में रामचरितमानस, पद्मावत और अन्य कालजयी और ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई। जिसने दुनियाभर में अपनी एक अलग पहचान और सम्मान अर्जित किया, उसी अवधी के क्षेत्र वाले जब दिल्ली, मुम्बई या दूसरे शहरों में जाते हैं तो अपनी इस विरासत को भूल जाते हैं। वे भी अंग्रेजी या उस शहर की भाषा में ऐसे रम जाते हैं कि अपनी माटी की सुगन्ध तक वे भूल जाते हैं। इसी तरह की हालात बघेली, भोजपुरी, मगधी और छत्तीसगढ़ी की है। बच्चे अपनी बोली-भाषा की विरासत से पूरी तरह अपरिचित। उनसे पूछिए, कौन-सी भाषा-बोली वाले क्षेत्र से आए हो तो उन्हें कुछ पता ही नहीं। यह है अंग्रेजी अपनाने का परिणाम। हम अपने आप से ऐसे ही कटते रहे, तो आने वाली दो-चार पीढ़ियों को यह भी पता नहीं होगा कि लोक-भाषा, लोक-संस्कृति, लोक-कला और लोकरंग जैसी कोई विरासत उनके उस क्षेत्र की पहचान हुआ करती थी कि नहीं। जिस क्षेत्र से उनके दादे-परदादे ताल्लुक रखते थे उस इलाके की भाषा-बोली और संस्कृति क्या है? यह सांस्कृतिक और भाषाई संकट सारे भारतीय समाज के सामने है। इस संकट को क्या हम पहचानकर सावधान हो सकते हैं? यदि सावधान न हुए तो हम अपनी महान् विरासत को यूँ ही खो देंगे।

ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः-** किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

शङ्का समाधान – ९

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का-१. 'आचमन' ईश्वर स्तुति प्रार्थना-स्वस्तिवाचन-शान्तिकरणम् से पूर्व करना चाहिए या पश्चात्?

२. अंगस्पर्श में मुख के दोनों तरफ दो बार या मुख में एक ही बार अंगस्पर्श करना चाहिए?

३. यज्ञवेदी की तीन ही मेखला क्यों होती हैं?

वन्दना शास्त्री, कन्या गुरुकुल दाधिया

समाधान- पत्र में बीस शङ्काएँ हैं। पत्रिका में स्थान सीमित होता है। एक ही व्यक्ति की इतनी शङ्काओं का एक साथ समाधान अव्यावहारिक है। अत: इनमें से कुछ के समाधान इस अंक तथा शेष के यथासम्भव अग्रिम अंकों में यथावसर देने का प्रयास किया जाएगा।

१. आचमन- आचमन यज्ञ से पूर्व करणीय कर्म है। गृह्यसूत्रकार सभी गृह्यकर्मों-यज्ञों/संस्कारों में आचमन के पश्चात् ही कर्म सम्पादन का विधान करते हैं। तद्यथा-

क. 'यज्ञोपवीतिनाऽऽचान्तोदकेन कृत्यम्'

– (गोभिल गृ. सू. १.१.२)

ख. 'नित्ये यज्ञोपवीतोदकाचमने....... पश्चादग्रेराचमनं त्रिराचमेद् द्विः परिमृजेत्.......'

– (जैमिनि गृ.सू. १.१)

श्रौत सूत्रकार भी नित्य आचमन का विधान करते हैं-

क. 'नित्यमाचमनम्'-(आश्व. श्रौ. पूर्वपट्क २.२) **तथा सभी ऋत्विज भी आचमन करें**- (वही-१.१२)

ख. 'यज्ञोपवीती दैवानि कर्माणि कुर्यात् प्राचीनावीती पित्र्याण्याचान्तोदकोऽहसन्'

– (वाराह श्रौ. १.१.१५)

यहाँ यह भी स्मरणीय है कि सूत्रकार यज्ञ सम्पादनार्थ यज्ञोपवीती होना भी आवश्यक मानते हैं। अधिक प्रमाण सूत्र ग्रन्थों में दृष्टव्य हैं।

सूत्र ग्रन्थों में-**'ईश्वरस्तुति प्रार्थना-स्वस्तिवाचन-शान्तिकरणम्'**-इस रूप में (मन्त्र संग्रह) उपलब्ध नहीं है। मन्त्रों का इस रूप में वर्गीकरण तथा विनियोग महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया है। हाँ, श्रौत-यज्ञों में पुरोनुवाक्या होती हैं। महर्षि विहित पद्धति में वर्णित मन्त्र जिनसे स्वाहापूर्वक आहुति दी जाती हैं, श्रौत दृष्टि में याज्या कहे जा सकते हैं। 'ईश्वरस्तुति प्रार्थना-स्वस्तिवाचन-शान्तिकरणम्' के रूप में संगृहीत होकर यज्ञ-आहुति देने से पूर्व पढ़े जाने के कारण पुरोनुवाक्या स्थानी हैं। (वह मन्त्र जो द्रव्य त्याग-आहुति देने वाले मन्त्र/मन्त्रों से पूर्व पढ़े जाएं)। किन्तु यह स्मरण रखने योग्य है कि पुरोनुवाक्या प्राय: एक ही ऋक् होती है। जबकि महर्षि ने क्रमश: आठ, इकतीस तथा अट्ठाईस मन्त्रों का समुच्चय कर सब संस्कारों के आदि में पाठ का विधान किया है। (यह ध्यान रखना चाहिए कि संस्कार विधि का मुख्य प्रतिपाद्य संस्कार ही हैं, अग्निहोत्र विधि तो गृहस्थ का नित्य कर्त्तव्य होने के कारण प्रसंगोपात्त होने से गृहाश्रम प्रकरण में निर्दिष्ट की गई है।)

यदि इन मन्त्रों को यज्ञ का भाग/पुरोनुवाक्या स्थानी मानकर पाठ किया जाए, तब आचमन इनसे पूर्व होना चाहिए। उक्त मन्त्रों को यज्ञ का अंग न मानते हुए स्वतन्त्र रूप में पढ़ें और यज्ञ केवल अग्न्याधान से प्रारम्भ मानते हों, तब आचमन इन मन्त्रों के बाद भी कर सकते हैं। इस स्थिति में यह भी ध्यातव्य है कि यज्ञ में जिन कर्मों के स्थान विशेष का विधान नहीं किया गया हो, वह सभी कर्म यज्ञस्थान-यज्ञवेदी-विहार से उत्तर दिशा में यज्ञीय आसनों से अलग दूसरे आसन पर बैठकर सम्पादित करने का विधान है। तद्यथा-

क-'उत्तरत उपचारो यज्ञः'

-(कात्यायन श्रौ. १.८.२६)

ख-'उत्तरत उपचारो विहारः'-(वाराह श्रौ. १.१.१०)

ग-'आग्नीध्रस्य उत्तरते उपचारः'

-(वैतान श्रौ. १.१.९) तथा-(सत्याषाढ़ श्रौ. १.१.२)

उक्त मन्त्रों को यज्ञ से असंबद्ध मानने पर इनके स्थान (जहाँ बैठकर ये पढ़े जाएं) का निर्देश भी अपेक्षित है। वह स्थान विशेष कहीं (संस्कार विधि में) उल्लिखित नहीं, तब तो इन मन्त्रों का पाठ यज्ञवेदी से अलग बैठकर करना चाहिए, किन्तु कोई यजमान इनका पाठ अलग बैठकर

नहीं करता, अपितु यज्ञ के एक अंश की तरह इन मन्त्रों को पढ़ दिया जाता है। इस स्थिति में इन्हें यज्ञ-भाग मानने में क्या कठिनाई है? यह समझ से परे है।

यहाँ यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि संस्कार विधि में शब्दानुपूर्वी का आग्रह करते हुए आचमन के विधान को इन मन्त्रों के पश्चात् (सामान्य प्रकरण में) पठित होने से आचमन को इन मन्त्रों के पाठोपरान्त करणीय कर्म मानना उचित नहीं है। क्योंकि संस्कार विधि का सामान्य प्रकरण श्रौत सूत्रों के परिभाषा प्रकरण के सदृश है। परिभाषा कभी शब्दानुपूर्वी रूप में प्रवृत्त नहीं होती है, अपितु जहाँ प्रसंग होगा, वह उपस्थित हो जाएगी। इसी प्रकार संस्कार विधि का सामान्य प्रकरण है। इसमें विहित विधि यथाप्रसंग-यथा अवसर कर्त्तव्य है।

यज्ञ की सामान्य विधि है- आचमन, अग्न्याधान, समिदाधान, जलप्रोक्षण..........। किन्तु संस्कार विधि में

क. शालाकर्म के-''अग्न्याधान, समिदाधान, जलप्रोक्षण, आचमन करके''।

ख. चूड़ाकर्म के-''कुण्ड के चारों ओर जल छिटका के, पूर्व पृष्ठ २०-२१ में लिखित अग्न्याधान-समिदाधान कर अग्नि को प्रदीप्त करके......''

ग. उपनयन के......''समिदाधान, अग्न्याधान कर........''

इत्यादि स्थलों पर निर्दिष्ट विधि क्या आनुपूर्वी (जिस प्रकार निर्दिष्ट है उसी क्रम से) रूप में सम्भव है? नहीं, तब क्या यह संस्कार विधि की त्रुटि है? (यदि आनुपूर्वी मानेंगे, तब ऐसे स्थल की संगति लगाना क्या सम्भव होगा?) हमारा निवेदन है कि नहीं। यदि हम सूत्र ग्रन्थों को ठीक से समझते हैं, तब कोई त्रुटि नहीं है, क्योंकि उक्त कृत्य औचित्यानुसार करने पर कहीं कोई विरोध या विसंगति नहीं होगी। अर्थात् उक्त स्थल पर ये-ये कर्म कर्त्तव्य हैं, उन्हें औचित्यानुसार जैसे-शालाकर्म में विहित अग्न्याधान, समिदाधान, जलप्रोक्षण तो उक्त क्रम से ही होंगे, किन्तु आचमन सबसे अन्त में उल्लिखित होने पर भी सबसे पहले होगा।

इसी प्रकार चूड़ाकर्म में भी जलप्रोक्षण सर्वप्रथम उल्लिखित होने पर भी समिदाधान के बाद होगा। इस प्रकार करने पर न तो अनौचित्य का प्रसंग होगा और न ही महर्षि विहित विधि का शास्त्र से विरोध। शब्दानुपूर्वी क्रिया का आग्रह करने वालों को कात्यायन श्रौतसूत्र-१.५.५ के निम्न वचन पर विचार करना चाहिए-

''**विरोधेऽर्थस्तत्परत्वात्**'' अर्थात् पाठक्रम की अपेक्षा अर्थक्रम बलवान् है।

आचमन के प्रयोजन को भी दृष्टिगत रखना चाहिए। पुरुष अपने अनृतमय (प्रतिगामी, जड़, विवेकहीनता आदि) आचरण के कारण अमेध्य (यज्ञ सम्पादन के अयोग्य) है। आप:-जल मेध्य हैं। आप: का उपस्पर्श आचमन-अङ्गस्पर्श मेध्यता सम्पादनार्थ हैं तथा कफादि की निवृत्ति (सत्यार्थप्रकाश समु. ३ के अनुसार) भी प्रारम्भ में किया जाना ही औचित्यपूर्ण है। शतपथ (१.१.१) का वचन है-

''तद् यदप उपस्पृशति-अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति, तेन पूतिरन्तरत:। मेध्या वा आप:। मेध्यो भूत्वा व्रतमुपयानीति। पवित्रं वा आप:, पवित्रपूतो व्रतमुपयानीति। तस्माद् वा अप उपस्पृशति।''

सूत्रकार प्रत्युपस्पर्शन-पुन: आचमन का भी उल्लेख करते हैं-(द्र. गोभिल गृ.सू.१.२.३१-३२)। वह किन अवस्थाओं में किया जाता है, इसे तत्तत् ग्रन्थों में देखा जा सकता है।

२. अंगस्पश -यज्ञादि अवसरों पर आचमन के पश्चात् अंगस्पर्श (यह भी मेध्यता सम्पादनार्थ क्रियमाण कर्म है) भी शास्त्रविहित करणीय कर्म है। तद्यथा-

क.-''आचम्य प्राणान्त्संमृशति वाङ्म आस्ये नसो: प्राणोऽक्ष्णोश्चक्षु: कर्णयो श्रोत्रं बाह्वोर्बलमूर्वोरोजोऽरिष्टानि मेऽङ्गानितनूस्तन्वा मे सहेति''-(पारस्कर गृ.सू. ३.२५)

ख.- ''इन्द्रियाण्यद्भि: संस्पृशेत्''-(गोमिल गृ.सू. १.२.७) अंगस्पर्श के समय साकांक्ष होने से सर्वत्र 'मे' अनुषक्त रहता है (मन्त्र में वाक् के साथ पढ़ा गया है किन्तु अंगस्पर्श करते समय 'नसो':, 'अक्ष्णो:', 'कर्णयो:' आदि के साथ बोला जाता है।) तथा 'अस्तु' का अध्याहार है। अङ्गानि के बहुवचनान्त होने से 'अस्तु' का अध्याहार न होकर 'सन्तु' पद का अध्याहार किया जाता है। स्पर्श के समय जिस इन्द्रिय के जितने गोलक या स्थान हैं उन (सब) का स्पर्श किया जाता है। जैसे-'नसो:' द्विवचनान्त है, नासिका (प्राण लेने-छोड़ने) के दो छिद्र हैं। अत:

शेष भाग पृष्ठ संख्या ८ पर..........

संस्था - समाचार

महर्षि के बलिदान समारोह ''ऋषि मेले'' की तैयारियाँ विशेष रूप से चल रहीं हैं। इस वर्ष ऋषि मेले पर परोपकारिणी सभा 'वैदिक पुस्तकालय' द्वारा कुछ नये प्रकाशन आर्यजनों की सेवा में प्रस्तुत किये जायेंगे, इनमें प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' की '**वैदिक इस्लाम**' एवं '**इतिहास बोल पड़ा**' ऐतिहासिक व तार्किक दृष्टि से उपयोगी पुस्तके हैं। नये लघु रूप में प्रकाशित '**वैदिक नित्य कर्म विधि**' जिसमें सामान्य एवं बृहद् यज्ञ के साथ दैनिक उपयोग में आने वाले सभी मन्त्र एवं सभी विशेष पर्वों एवं उत्सवों के आहुति मन्त्र भी सम्मिलित हैं। आचार्य धर्मवीर द्वारा लिखित '**सत्यार्थ प्रकाश में क्या है**' यह सत्यार्थ प्रकाश का मौलिक परिचय कराने वाली लघु पुस्तक है। इसके साथ आचार्य जी द्वारा 'परोपकारी' में लिखे गये **सम्पादकीयों को पुस्तक** रूप में छापने की प्रबल मांग रही है, अत: वे लेख भी पुस्तक रूप में उपलब्ध रहेंगे। सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं के समाधान के साथ-साथ आध्यात्मिक विषयों पर वेद का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए लिखी गई शृंखला '**स्तुता मया वरदा वेद माता**' विशेष दार्शनिक होने के साथ-साथ अति सरल भी है, जो कि प्रत्येक वैदिक धर्मी को पढ़नी चाहिये। एक परिव्राजक की भाँति देश-विदेश में घूमकर आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का प्रचार करने में आचार्य श्री ने अपना पूरा जीवन बिताया। हॉलैण्ड व अमेरिका में प्रचार के दौरान वहाँ की परिस्थितियों का विवरण व अनुभव उनकी डायरी '**बेताल फिर डाल पर**' में पाठक पढ़ सकेंगे। साथ ही **धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित 'स्मारिका'** भी विशेष आकर्षण का विषय रहेगी। वैदिक पुस्तकालय में ऋग्वेद संहिता भी इस वर्ष उपलब्ध रहेगी। परोपकारिणी सभा महर्षि के कार्यों व वैदिक धर्म की उन्नति के लिये आर्यजनों को इस समारोह में हृदय से आमन्त्रित करती है।

सभा की दक्षिण भारत प्रचार-यात्रा का समापन- परोपकारिणी सभा के ज्ञानवृद्ध इतिहासज्ञ प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' के नेतृत्व में दक्षिण भारत की प्रचार यात्रा का समापन हुआ। सभी लोग २२ अगस्त को लौटे। यात्रा में हुए आयोजनों के कार्यक्रमों की जानकारी जिज्ञासु जी ने दी। इस यात्रा से सभा व आर्यसमाज को कई उपलब्धियाँ हुईं।

इन्दौर में तीनो आर्यसमाजों के अधिकारियों, युवा कार्यकर्त्ताओं से भेंट। यहाँ पर 'वैदिक इस्लाम' पुस्तक की एक हजार प्रतियों की मांग हुई, परन्तु केवल ६०० प्रतियाँ ही साथ में होने के कारण ३०० प्रतियाँ ही उन्हें दे पाये। हैदराबाद में प्रतिनिधि सभा के प्रधान ठाकुर लक्ष्मण सिंह द्वारा पं. नरेन्द्र भवन में कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। यहाँ 'वैदिक इस्लाम' पुस्तक का विमोचन ठाकुर लक्ष्मण सिंह द्वारा किया गया। हैदराबाद सत्याग्रह में निजाम पर बम फेंकने वाले क्रान्तिवीर नारायण पवार वृद्धा पत्नी व पुत्र का अभिनन्दन सभा की ओर से किया गया, साथ ही उन्हें ऋषि मेले का आमन्त्रण भी दिया गया।

युवा कार्यकर्त्ता श्री राहुल आर्य ने मुस्लिमों से शास्त्रार्थ किया अत: सभा द्वारा उनका भी अभिनन्दन किया गया।

मन्नानूर में उस स्थल के दर्शन भी किये, जहाँ पर पं. नरेन्द्र को काले पानी में पिंजरे में कैद करके निजाम सरकार द्वारा रखा गया था। कर्नाटक की बीदर जेल में जहाँ पर भाई श्यामलाल (आचार्य धर्मवीर जी के नाना) को निजाम सरकार द्वारा विष दिया गया था, उस तीर्थ का अवलोकन किया। यह समाचार कर्नाटक की सभी आर्यसमाजों में प्रसारित हो गया। बैंगलोर की तीनों आर्यसमाजों में कार्यक्रम हुए। यहीं पर संसार के सर्वाधिक वृद्धों में से एक श्री सुधाकर चतुर्वेदी (१२० वर्ष) से भी भेंट हुई। उन्हें ऋषि मेले का निमन्त्रण दिया गया जो कि उन्होंने स्वीकार कर लिया। सुधाकर जी एकमात्र जीवित व्यक्ति हैं, जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के सत्संग का लाभ लिया, उनके दर्शन किये। उनकी पुत्री डॉ. सुमित्रा व श्री श्रुतिप्रिय ने जिज्ञासु जी के श्रद्धानन्द विषयक अनुसन्धान में उनकी सहायता की। वहाँ से सुरम्य नदी के तट पर शान्त वन में स्थित 'शान्तिधाम' गुरुकुल भी गये।

केरल के कालिकट में आचार्य राजेश ने अपने संस्थान में दो बड़े व सफल कार्यक्रम कराये। यह संक्षेप से यात्रा का विवरण है, विस्तृत विवरण आगामी अंकों में पढ़ सकेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी, अलीगढ़ का उद्‌बोधन- ऋषि उद्यान वैदिक विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को समर्पित स्थल है। अपनी प्रचार यात्राओं के अन्तर्गत विद्वान् व संन्यासी यहाँ आकर विद्यार्थियों व आश्रमवासियों के साथ ज्ञान चर्चा कर उनका मार्गदर्शन भी करते हैं।

अलीगढ़ गुरुकुल के संचालक स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी प्रचार-यात्रा के अन्तर्गत ऋषि उद्यान की तप:स्थली में एक दिन रुके व प्रात:काल यज्ञशाला में सभी आश्रमवासियों को आध्यात्मिक

उद्बोधन प्रदान किया।

गुरुकुल ऋषि उद्यान की वाग्वर्धिनी सभा- सभा द्वारा संचालित गुरुकुल में दर्शन एवं व्याकरण की कक्षाएं तो नियमित होती ही हैं। साथ ही विद्यार्थियों में वक्तृत्व कला को विकसित करने का प्रयास भी किया जाता है। विद्यार्थियों ने जो पढ़ा, जो सीखा उसका प्रस्तुतिकरण समाज में सटीक ढंग से कर सकें एवं वैदिक सिद्धान्तों को जन-सामान्य को बता सकें इस प्रयोजन के लिये गुरुकुल में प्रति सप्ताह एक अनौपचारिक कक्षा आयोजित की जाती है-वाग्वर्धिनी सभा। प्रति सप्ताह कुछ (लगभग चार) विद्यार्थियों को चुना जाता है और इन्हें स्वतन्त्र या पूर्व निर्धारित विषय पर केवल १० मिनट तक व्याख्यान देना होता है। इस प्रकार प्रति सप्ताह अलग-अलग विद्यार्थियों को ये प्रस्तुतिकरण देना होता है। सभी के व्याख्यान पूर्ण होने के पश्चात् श्रोता-विद्यार्थियों द्वारा उनकी समीक्षा की जाती है व त्रुटियों का संशोधन किया जाता है। इस सभा में एक संचालक व अध्यक्ष भी नियुक्त किया जाता है। प्रत्येक सभा का प्रारम्भ ईश्वर भक्ति गीत के द्वारा किया जाता है, जिससे गायन प्रतिभा का भी विकास होता है। सबसे अन्त में सभाध्यक्ष के विचार सुने जाते हैं।

गत दो सभाओं में आठ विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में अपना-अपना विषय प्रस्तुत किया। इनमें ब्र. रूपेश, ब्र. रोशन, ब्र. सत्यव्रत, ब्र. भास्कर, ब्र. तीर्थराम, ब्र. ज्ञानप्रकाश, ब्र. प्रशान्त, ब्र. लालदेव के व्याख्यान हुए व ब्र. प्रणव एवं ब्र. ज्ञानप्रकाश के भजन हुए। इस सभा का अध्यक्ष पद प्राय: गुरुकुल के उपाचार्य सत्येन्द्र आर्य कार्यभार सम्भालते हैं। प्रस्तुति में प्राय: आध्यात्मिक विषयों को ही लिया जाता है। साथ ही सामाजिक समस्याओं पर भी प्रस्तुतियां होती हैं।

प्रात: व सायं यज्ञोपरान्त प्रवचन शृंखला में आचार्य सत्यजित् आर्य, आचार्य सोमदेव आर्य, उपाचार्य सत्येन्द्र आर्य, ब्र. वरुण देव आर्य, श्री लक्ष्मण मुनि एवं ब्र. विमल आर्य के व्याख्यान हुए। रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य रामदयाल** ने भजन सुनाया-'ऋषिवर तो आया था जग को जगाने, चाहे कोई माने चाहे न माने। किया जो उपकार उसने सब को बचाने, चाहे कोई माने चाहे न माने।..............'

अतिथि- महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा एवं वस्तु प्रदर्शनी देखने, विद्वानों-संन्यासियों से मिलने, यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने, भ्रमण तथा प्रचार हेतु ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गृहस्थ स्त्री-पुरुष-बच्चे आते रहते हैं। पिछले पन्द्रह दिनों में हिसार, सूरत, पलवल, बड़ौदा, केकड़ी, करनाल, मुरसाल, पिपरा, मधुबनी, पुष्कर, अलीगढ़, सूरत, जोधपुर, अंबेडकर नगर, खम्बात, नजफगढ़, भीलवाड़ा, जयपुर, चापानेरी, बुलन्दशहर, भीनमाल, गंगापुर सिटी, शिमला, रेवाड़ी आदि स्थानों से कुल ८२ अतिथि ऋषि उद्यान आये।

जन्मदिन - ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में १८ अगस्त को श्री लक्ष्मण मुनि जी ने अपने पुत्र दुबई निवासी श्री रविशंकर जी के जन्मदिवस पर यज्ञ किया। २१ अगस्त को श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' जी ने अपने दामाद डबलिन (आयरलैण्ड) निवासी श्री भास्कर सेन गुप्ता के जन्मदिवस पर यज्ञ किया। जन्माष्टमी के दिन श्रीमती उर्मिला उपाध्याय जी ने अपने पति श्री देवमुनि जी के जन्मदिवस पर यज्ञ किया। यजमानों को संन्यासियों, वानप्रस्थियों, विद्वानों तथा वृद्धजनों ने आशीर्वाद प्रदान किया। परोपकारिणी सभा परिवार की ओर से इन सबके जन्मदिवस पर उनके दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए शुभकामनाएँ।

आर्यजगत् के समाचार

१. आर्यसमाज देवनगर का वार्षिकोत्सव- आर्यसमाज देवनगर जि. महेन्द्रगढ़ हरियाणा का वार्षिकोत्सव २१ व २२ अक्टूबर २०१७ को श्रद्धापूर्वक सोत्साह मनाया जायेगा। इस अवसर पर विख्यात आर्य विद्वान् मनुस्मृति के भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र कुमार को '**डॉ. धर्मवीर आर्य पुरस्कार**' से सम्मानित किया जा रहा है। वह इस गौरवपूर्ण पुरस्कार को पाने वाले दूसरे विद्वान् हैं। इससे पहले यह पुरस्कार आचार्य विरजानन्द दैवकरणि को दिया गया।

इस अवसर पर आचार्य विरजानन्द, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. वेदपाल, श्री सोमदेव आर्य, भजनोपदेशक कविवर नरदेव-भरतपुर समारोह की शोभा बढ़ायेंगे। आर्यों का यह मेला आर्यसमाज के स्वर्णिम अतीत का स्मरण करवाने वाला होता है।

उल्लेखनीय है कि **यह पुरस्कार राशि की दृष्टि से भी आर्यसमाज का सबसे बड़ा पुरस्कार है।**

२. जन्माष्टमी मनाई- वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर एवं आर्यसमाज कलोई के संयुक्त तत्त्वावधान में योगीराज श्री कृष्ण का जन्माष्टमी समारोह कलोई में बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें यज्ञ, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम हुआ।

३. यज्ञोपवीत संस्कार मनाया- २२ अगस्त २०१७ को वैदिक गुरुकुल, जो आर्यसमाज रुद्रपुर द्वारा संचालित है, में आठ बच्चों का यज्ञोपवीत/उपनयन संस्कार आचार्य डॉ.

विश्वमित्र शास्त्री के मार्गदर्शन में किया गया।

४. विद्यार्थी पुरस्कार दिवस- महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड ने अपने संस्थापक, अध्यक्ष महात्मा कन्हैयालाल महता का जन्मदिवस १५ जुलाई २०१७ हर्षोल्लास के साथ 'विद्यार्थी पुरस्कार दिवस' के रूप में सम्पन्न किया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती सीमा त्रिखा, (मुख्य संसदीय सचिव-हरियाणा सरकार) तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुमन बाला-(महापौर फरीदाबाद) ने उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाई।

५. बलिदान दिवस- आर्यसमाज बगरू, दयानन्द आश्रम में हैदराबाद बलिदान दिवस एवं श्रावणी उपाकर्म पर्व समारोहपूर्वक मनाया। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का पाठ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण व प्रार्थना मन्त्रों का पाठ किया गया। सभी सदस्यों ने यज्ञोपवीत धारण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ उपप्रधान चन्द्रप्रकाश झँवर ने की। साथ ही संस्कृत दिवस होने से दयानन्द उ.प्रा. विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने संस्कृत भाषा में कविता पाठ किया।

६. प्रचार-प्रसार- दि. २७ अगस्त २०१७ को ऋषि मिशन न्याय, अजमेर व आर्यसमाज (वैदिक सत्संग आश्रम) पुष्कर के तत्वावधान में श्री सच्चिदानन्दस्वरूप मुनि व श्री नन्दकिशोरार्य द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार के लिए रामधाम, डेयरी संचालक, गनाहेडा में दिव्य मुरारी बापू आश्रम, चावण्डिया, चाय की दुकानों व कई व्यक्तियों से धर्म चर्चा कर 'परोपकारी' पत्रिका व 'अजमेर जिले में महर्षि दयानन्द सरस्वती' पुस्तक भी वितरित की गई।

७. निःशुल्क आँखों की जाँच- गोकुलजी कि प्याऊ स्थित आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर, पूंजला, जोधपुर व शार्प एनजीओ के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज के प्रांगण में निःशुल्क आँखों की जाँच व चश्मा वितरण का शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १५२ लागों ने लाभ उठाया।

८. वेद प्रचार व वक्तृत्व स्पर्धा सम्पन्न- आर्यसमाज कांकरिया, अहमदाबाद के तत्वावधान में वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन २२ से २७ अगस्त २०१७ को गांधीनगर व अहमदाबाद में किया गया। इस कार्यकम में आचार्य सोमदेव, भजनोपदेशक श्री योगेशदत्त आर्य उपस्थित रहे।

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रतिवर्ष वैदिक सिद्धान्त आधारित विभिन्न विषयों को लेकर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन किया जाता है। उसी के अन्तर्गत इस वर्ष २०१७ में भी 'आदर्श परिवार' व 'मानव संगठन के उपाय' विषयों पर पूरे गुजरात में आयोजन किया गया। आर्यसमाज कांकरिया में ३० अगस्त को विभिन्न विद्यालय के छात्रों ने इस स्पर्धा में भाग लिया। स्पर्धा की विशेषता यह रही कि इस बार मुस्लिम बालक-बालिकाओं की उपस्थिति काफी रही, जिन्होंने संस्कृत श्लोकों के साथ अपना वक्तृत्व प्रस्तुत किया। निर्णायक के रूप में गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के स्नातक प्रो. विश्वनाथ शास्त्री, आर्यसमाज गांधीनगर के सदस्य श्री महेन्द्र गांधी व गुजरात विश्वविद्यालय के जतिनभाई थे। संचालन वेदबन्धु शास्त्री ने किया।

९. वेदप्रचार व श्रावणी पर्व सम्पन्न- स्त्री आर्यसमाज मन्दिर बहावलपुर, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान में षड् दिवसीय वेदप्रचार समारोह सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा लिखित 'सफल जीवन के मूल मन्त्र' नामक पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया।

१०. श्रावणी उपाकर्म व चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न- नुआपड़ा जिला में स्थित गुरुकुल हरिपुर जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर ७ अगस्त २०१७ को गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट ३० ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ तथा विद्याव्रत संस्कार, एक आदर्श गृहस्थी द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित होना आदि कार्यक्रम के साथ 'यज्ञ एक समाधान अनेक' विषयक ब्रह्मचारियों का सांस्कृतिक कार्यकम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के प्रत्यक्ष सान्निध्य व मार्गदर्शन तथा गुरुकुल के आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

११. प्रवेश प्रारम्भ- कन्या गुरुकुल भुसावर, राजस्थान में माता या पिता के प्यार से वंचित, उपेक्षित अथवा साधनहीन बेटियों को पढ़ाने तथा संस्कारवान एवं सुयोग्य बनाने के लिए 'आँचल-छाया' नाम से एक नया विभाग प्रारम्भ किया गया है। ऐसी बेटियों की निःशुल्क व्यवस्था आँचल-छाया में होगी। केवल कक्षा ४ से ७ तक ही प्रवेश हो सकेगा। परम्परागत गुरुकुलीय शिक्षा, कम्प्युटर, संगीत एवं सिलाई प्रशिक्षण सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्त की विशेषज्ञा भजनोपदेशिका तैयार करना गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य है। भजनोपदेशिका गुरुकुल में उन्हीं छात्राओं को प्रवेश

शेष भाग पृष्ठ संख्या ७ पर....

हैदराबाद यात्रा के दौरान विश्व के सर्वाधिक वृद्ध पं. सुधाकर 'चतुर्वेदी' (१२२ वर्ष) के साथ प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्यसमाज की वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध विभूति **पं. सुधाकर 'चतुर्वेदी'** वर्तमान में विश्व में सबसे बड़ी आयु के व्यक्ति हैं। आपने स्वराज्य संग्राम में भी अनेक कष्ट सहे। आपने स्वतंन्त्रता सेनानी पेंशन लेना भी स्वीकार नहीं किया। आप सरदार पटेल व गांधी जी के भी निकट रहे।

पं. सुधाकर 'चतुर्वेदी'

स्वामी श्रद्धानन्द जी और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का शिष्य होने का गौरव आपको प्राप्त है। वर्तमान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के दर्शन करने वाले विश्व के एकमेव जीवित व्यक्ति आप हैं। इस अवस्था में भी आपकी स्मृति असाधारण है। आप कई भाषाओं के लेखक हैं। कन्नड़ के ऊंचे कवि और चारों वेदों के **कन्नड़ में भाष्य करने का आपका कीर्तिमान** है। इस अवस्था में भी आपके बाल काले हैं तथा आज भी स्वाध्याय-लेखन कार्य भी नियमपूर्वक करते हैं।

परोपकारिणी सभा द्वारा विश्व के सर्वाधिक वृद्ध श्री सुधाकर चतुर्वेदी (१२२ वर्ष) का हार्दिक सम्मान

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ सितम्बर, २०१७ आर.एन.आई. ३९५९/५९

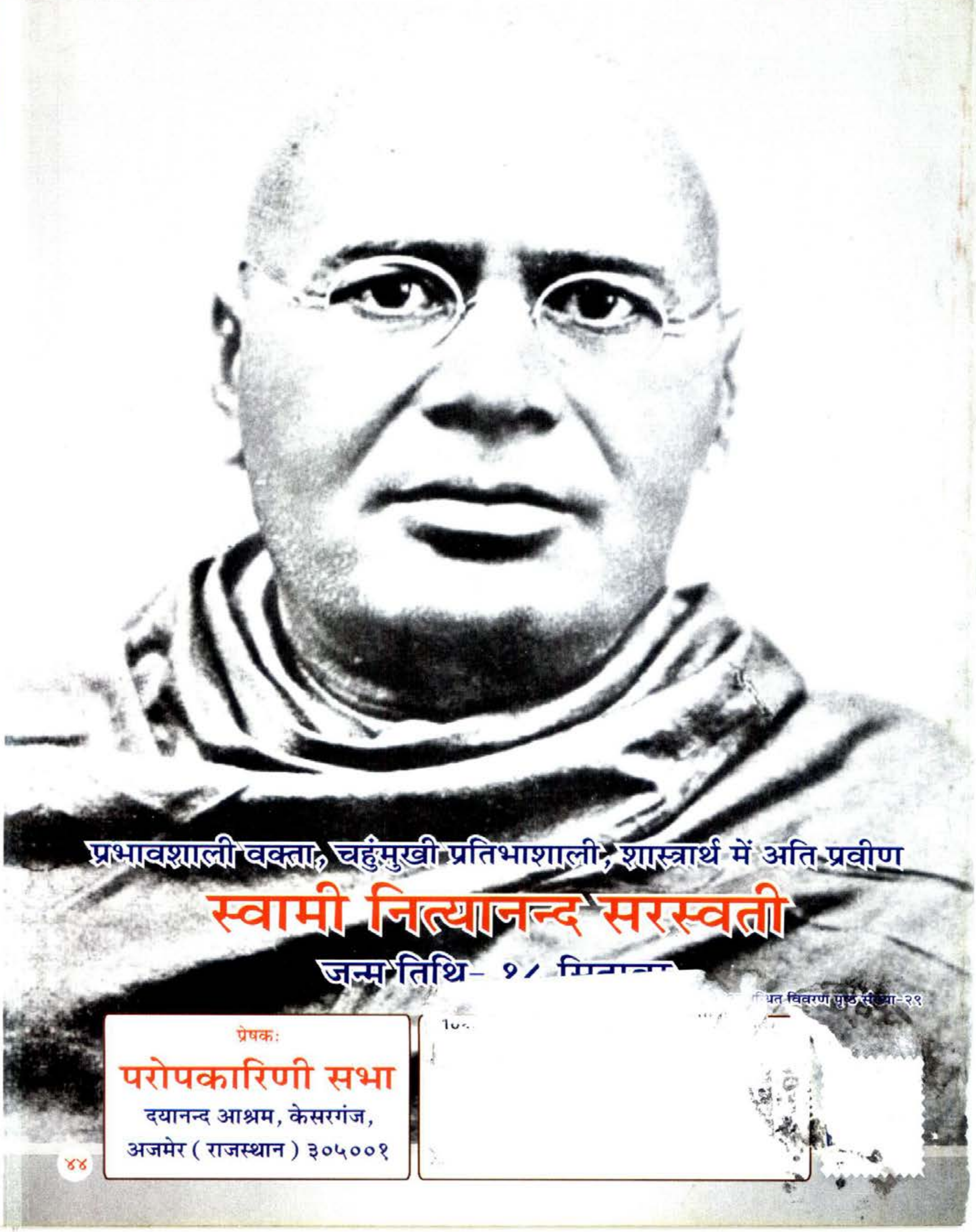

प्रभावशाली वक्ता, चहुंमुखी प्रतिभाशाली, शास्त्रार्थ में अति प्रवीण

स्वामी नित्यानन्द सरस्वती

जन्म तिथि- १८ सित...

...धित विवरण पृष्ठ संख्या-२९

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१